गौरैया:
एक अधूरा आँगन

(विलुप्ति की कगार पर खड़ी एक नन्ही आवाज़
और उसके संरक्षण की पुकार)

Copyright © 2026 by Shree Ram Ray

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its copyright holder indicated above.

ISBN: 978-93-7265-422-6
Price:199.00
Publishing Year 2026

Published by:
Ink Vision Press Publishing
Head Office: Bilaspur, Chhattisgarh 495006
Phones: +91 91311 15675
Email: info@inkvisionpress.com
Website: www.inkvisionpress.com

गौरैया:
एक अधूरा आँगन

(विलुप्ति की कगार पर खड़ी एक नन्ही आवाज़
और उसके संरक्षण की पुकार)

संपादक: श्रीराम राय

सह संपादक: डॉ रवीन्द्र प्रसाद "दैवज्ञ"
सह संपादक: आदरणीय सुरेश विद्यार्थी

समर्पण:-

उन 'करुणा के हाथों' को...

जो तपती दुपहरी में पक्षियों के लिए दाना - पानी रखते हैं और उजड़ते वनों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हैं।

धरती के उन रक्षकों के नाम, जिनके कारण आने वाली पीढ़ियाँ शायद किताबों के बाहर भी गौरैया की चहक सुन सकेंगी। इस 'अधूरे आंगन' को निस्वार्थ सेवा से सींचने वाले हर जीव-प्रेमी को सादर भेंट।

संपादकीय:

आंगन की उस अधूरी चहक के नाम

प्रकृति और मनुष्य की कहानी उतनी ही पुराना है जितनी कि यह सृष्टि। लेकिन विकास की अंधी दौड़ और कंक्रीट के बढ़ते जंगलों ने हमसे वह सब छीन लिया जो कभी हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हुआ करता था। आज जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो पाते हैं कि हमारे घरों के आंगन तो दूर दीवारों के परकोटे भी सूने हो चुके हैं। वह नन्हीं सी जान, वह चपल-चंचल गौरैया, जो कभी अलसुबह अपनी 'चूं-चूं' से हमें जगाया करती थी, आज महज़ यादों और कविताओं का हिस्सा बनकर रह गई है। 'गौरैया : एक अधूरा आंगन' इसी टीस और संरक्षण के संकल्प की एक सामूहिक पुकार है। यह कविता संकलन केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि उन सजग रचनाकारों की संवेदनाओं का निचोड़ है, जिन्होंने अपनी कलम के माध्यम से गौरैया के अस्तित्व को बचाने का आह्वान किया है।

इस संकलन का संपादन मेरे लिए केवल एक साहित्यिक दायित्व नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति एक ऋण चुकाने जैसा है। इस वैचारिक यात्रा में मुझे आदरणीय रविंद्र प्रसाद जी और सुरेश विद्यार्थी जी जैसे विद्वान संपादक मंडल का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिनके मार्गदर्शन ने इस कृति को एक गरिमामयी स्वरूप प्रदान किया है।

इस भगीरथ प्रयास को धरातल पर उतारने में शिखा पांडे जी का विशेष योगदान रहा है, जिनकी लगन और सहयोग के बिना इस संकलन को पूर्णता प्रदान करना कठिन था। साथ ही, मैं ' राष्ट्रीय कवि स्पर्श मंच ' परिवार का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिसके बैनर तले गौरैया

संरक्षण की यह गूँज जन-जन तक पहुँचने के लिए तैयार है।यह भी उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय कवि स्पर्श मंच निरंतर साहित्य, पर्यावरण और देश प्रेम को समर्पित संकलन "ऑपरेशन सिंदूर", "आओ पर्यावरण बचाओ", "आओ योग करें", "अनुपम लघु कथाएं", "रक्षाबंधन" और "शिक्षक दिवस कविता संकलन" आदि का प्रकाशन सफलतापूर्वक कर चुका है।

यह मानना है कि जब तक आंगन में गौरैया नहीं लौटती, तब तक हमारा विकास अधूरा है। मिट्टी की सौंधी खुशबू, खपरैलों की छाँव और गौरैया की वह फड़फड़ाहट ही हमारे असली वैभव की पहचान है। उम्मीद है कि यह संकलन पाठकों के भीतर सोई हुई उस संवेदना को जगाएगा, जो फिर से किसी मुंडेर पर पानी का सकोरा और दाना रखने के लिए प्रेरित करे। आइए, इस अधूरे आंगन को फिर से पूरा करें।

— श्री राम राय
संपादक
श्रीकृष्ण नगर, औरंगाबाद, बिहार
दूरभाष ९४७१७२३८५२

सह सम्पादक रवीन्द्र प्रसाद की कलम से

विलुप्त होती गौरैया के संरक्षण, संवर्धन एवं पर्यावरण संतुलन के लिए 20 मार्च 2010 को विश्व गौरैया दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।और,उसी दिन से प्रतिवर्ष 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जा रहा।

गौरैया की घटती संख्या को बढ़ाने के उद्देश्य से मेरे घर की गौरैया साझा संकलन प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल द्वारा निर्णय लिया गया। मुख्य सम्पादक श्री राम राय की पूर्ण सहमति रही। परिणाम स्वरूप उन्होंने अथक प्रयास से गौरैया प्रेमियों से कविताएं संग्रह कर साझा संकलन को पूर्ण रूप दिया।

पर्यावरण की दृष्टिकोण से गौरैया का होना अति आवश्यक है। पर्यावरण को संतुलित रखने में गौरैया की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह प्रकृति की प्राकृतिक शोभा है।

इसे अपने घर में आश्रय देने की व्यवस्था सुनिश्चित किया जाना समीचीन होगा। तभी मेरे घर गौरैया साझा संकलन सार्थक होगा। एक ऐसी मान्यता है कि घर में गौरैया का बसना/रहना शुभ माना गया है। गौरैया को लक्ष्मी एवं कुलदेवी का रूप माना गया है।

गौरैया का घर में रहने से सुख, शान्ति एवं समृद्धि व सुकुन मिलता है।

गौरैया से सम्बंधित कविता वही कवि दिए हैं, जो गौरैया प्रेमी हैं। इसलिए उनसे उम्मीद है कि अपने घर में गौरैया को रखने के लिए गौरैया का घोंसला मंगाकर अवश्य संरक्षण देंगे।

मेरे घर की गौरैया साझा संकलन में संकलित सभी गौरैया प्रेमी कवियों की कविताएं श्लाघनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

-- डाॅ कवि रवीन्द्र प्रसाद दैवज्ञ
चतरा, झारखंड

भूमिका

"गौरैया- एक अधूरा आंगन" शीर्षक काव्य संग्रह के माध्यम से राष्ट्रीय कवि स्पर्श मंच के संस्थापक अध्यक्ष आदरणीय श्री राम राय जी ने एक साथ कई प्रयास किए हैं।सर्वप्रथम पर्यावरण से प्रेरित होकर एक पक्षी के नाम से काव्य संग्रह निकालकर वे लोगों को बताना चाहते हैं कि पर्यावरण को बचाकर ही हम स्वच्छ समाज का निर्माण कर सकते हैं। दूसरा प्रयास उनका यह है कि जिन्होंने समाज को बहुत कुछ दिया है उसे आमजन के पास लाकर वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत जरूर बनाना चाहिए। गौरैया कोई साधारण पक्षी नहीं है यह बिहार की राजकीय पक्षी है। इसके संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर गौरैया दिवस भी मनाया जाता है,प्रतिवर्ष 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस के माध्यम से इस पक्षी के संरक्षण का प्रयास एवं संदेश दिया जाता है।असाधारण पक्षी गौरैया पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में,कीटों को नियंत्रित करने में,परागण की निरंतरता को ऊर्जस्वित करने में अहम भूमिका निभाती है। लोक मान्यताओं के अनुसार घर में गौरैया का आना या घोंसला बनाना बेहद शुभ माना जाता है।सुख-समृद्धि, सकारात्मक ऊर्जा और सौभाग्य के आगमन का संकेत माना जाता है, यह पक्षी प्यार,शांति और उन्नति लाती है।छोटे बच्चे इस पक्षी को देखकर बहुत ही खुश होते हैं।

ध्रुवीकरण के दौर में प्रधान संपादक का यह प्रयास बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।श्री राम राय जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है और जब से इन्होंने पत्रिकाओं के प्रकाशन का बीड़ा उठाया तब से लेकर आज तक उनकी जो भी पत्रिका प्रकाशित हुई है,वह राष्ट्रीयता से प्रेरित हैं। उनके संपादन में अब तक जितनी भी पत्रिकाएं छपी हैं उसमें राष्ट्रीय स्तर के

कवियों , रचनाकारों ने अहम भूमिका निभाई है। इस काव्य संग्रह ने सहेजने,परोसने और सामाजिक पर्यावरण को बचाने का कार्य किया है।

सुरेश विद्यार्थी
प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय कवि स्पर्श मंच
राष्ट्रीय प्रवक्ता शब्दवीणा
उपाध्यक्ष जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद
मो-9931628036

गौरैया अष्टकम्

---डा॰ कवि रवीन्द्र प्रसाद "दैवज्ञ"

गौरैया देव्यै नमः
गौरैया मात्रे नमः
गौरैया धनदायै नमः
गौरैया धन लक्ष्म्यै नमः
गौरैया गौर्यै नमः
गौरैया कुलदेव्यै नमः
गौरैया त्वं जगन्माता गौरैया त्वं जगत्पिता।
गौरैया त्वं जगद्धात्री गौरैया देव्यै नमो नमः।।
गौरैया गौरी रूपायै गौरैया शान्ति प्रदायै।
धनदायै सुखदायै गौरैया त्वं नमो नमः।।
गौरवर्णा गौरूपिणी चंचला अर्थदायिनी।
गृहे स्थिता त्वं सदा हि गौरैया शान्तिदायिनी।।
लघु चंचु लघु पादं लघु काया सुसुन्दरी।
मधु वाचा कर्ण मधु मधु स्वर प्रदायिनी।।
गृहदोषशमनी त्वं गृहकल्याणकारिणी।

सुफलप्रदायिनी त्वं गृहे त्वं वसतु सदा।।
गौरैया त्वं कुलदेवी कुलदेवता रूपे त्वं।
यस्मिन् गृहे त्वं गौरैया गृहे तस्मिन् धनं धान्यम्।।
रैया लक्ष्मी सुन्दरी त्वं गौ गंगा गायत्री सदा।
कल्याणी शुभदा देवी गौरैया त्वं नमो नमः।।
संरक्षयेत् पालयेत् च जलमन्नं प्रदीयते।
लक्ष्मीं कुलदेवीं पूजा सफला भवति सदा।।
गौरैया अष्टकं पुण्यं स्तोत्रं चतुष्टयप्रदं।
गौरैया नमस्येत् नित्यं प्रातरेव पुनः पुनः।।

मेरे घर की गौरैया

मेरे घर की गौरैया,
बड़ा ही सुकुन देती।
सुबह सबेरे चह चह करती,
मन आह्लादित करती है।
मेरे घर की गौरैया।।

मेरे घर की गौरैया,
सुख वैभव शान्ति देती।
घर आंगन विचरण करती,
फुदक फुदक कुछ कहती है।
मेरे घर की गौरैया।।

मेरे घर की गौरैया,
पानी पीती दाना चुगती।
अटखेलियां खेला करती,
प्यार स्नेह की भर्ती हैं।
मेरे घर की गौरैया।।

मेरे घर की गौरैया,
मिलजुल के रहती।
संग हमारे पास भी रहती,
अद्भुत आनन्द भर्ती है।
मेरे घर की गौरैया।।

गौरैया गौरव शान हमारी

गौरैया गौरव शान हमारी,
प्रकृति की महारानी है।
पर्यावरण संतुलन में,
नहीं इसकी कोई शानी है।।
प्रकृति की महादेवी यह,
शान्त स्वभाव की रानी है।
नहीं मांगती दाना पानी,
स्कहीं जाकर पीती पानी है।।
शान्ति सुकुन घर को देती,
सुख समृद्धि बढ़ाती है।
चहलकदमी गौरैया का,
मन विकार भगाती है।।
गौरैया गौरव शान हमारी,
स्वाभिमान मान बढ़ाती है।
नेगैटिव उर्जा खत्म करती,
पोजैटिव उर्जा बढ़ाती है।।

---डाॅ कवि रवीन्द्र प्रसाद
"दैवज्ञ"

चीं चीं चूं चूं महामंत्र गौरैया का

चीं चीं चूं चूं महामंत्र गौरैया
का,
सुबह शाम नित श्रवण कीजिए।
सुख शान्ति समृद्धि मिलेगी,
गौरैया घर में बसा लिजिए।।
दस बीस घोंसला गौरैया का,
घर घर अपने लगवा लिजिए।
मन आह्लादित प्रसन्न होगा,
बात मेरी मान तो लिजिए।।
चीं बीज मंत्र है चामुण्डा का,
शक्ति बीज गौरैया देखिए।
महाकाली महालक्ष्मी और,
सरस्वती का शक्ति बीज
सुनिए।।
यह अनुपम अवसर घर पर,
जनम पुण्य प्रताप से पाइए।
यह सुअवसर लूट न जाये,
भाग्य सौभाग्य बदल जाइए।।

---डा ॅ कवि रवीन्द्र प्रसाद
"दैवज्ञ"
सिमरिया (चतरा)

गौरैया: घर-आंगन की रानी

पर्यावरण की रक्षक नन्हीं,
गौरैया कहलाती है,
लौट आ वापस प्यारी चिड़िया,
दुनिया तुझे बुलाती है।

मत मार इसे ओ आखेटक,
यह तो घर-घर की रानी है,
फुदक-फुदक कर जीने वाली,
आज महज इक कहानी है।

कच्ची मिट्टी के आंगन में,
जब चहक-चहक आती थी,
चूं-चूं करती, पंख फड़काती,
सबका मन हर्षाती थी।

विकास की अंधी आंधी ने,
छीने आंगन, छीने नीड़।
महलों के सन्नाटों में अब,
कहाँ बसेगी वह मासूम भीड़?

मानव थामे खूनी कुल्हाड़ी,
वन को निष्ठुर काट रहा।
दिखती नहीं है मिट्टी की क्यारी,
न चौखट और न खाट रहा।
लौट आओ फिर ओ गौरैया,
आंगन को फिर से आबाद करो,
खोया हुआ वो बचपन अपना,
मिट्टी की फिर से याद करो।

-- श्रीराम राय , शिक्षक
राष्ट्रीय अध्यक्ष "कवि स्पर्श मंच"
संपर्क ९४७१७२३८५२

मेरे आंगन की गौरैया

घर आंगन में आती जब
गौरैया,
खुश होते बच्चे और उनकी
मैया।
चहकती आवाज सुन जग जाते
भैया,
नभ प्रकाशित होता और हमारी
नैया।

घर आंगन में आती जब गौरैया
,
खुश होते बच्चे और उनकी
मैया।

मुंह में दाना भर भर कर लाती ,
अपने बच्चों को खूब
खिलाती।
खर पतवार बटोर सहेज कर,
बहुत ही सुंदर घर द्वार बनाती।

घर आंगन में आती जब
गौरैया,
खुश होते बच्चे और उनकी
मैया।

मेरे प्रांत की राज्य पक्षी गौरैया,
श्रम,धीर,वीर की प्रतीक
गौरैया।
गंगा,गीता,गाय,गुलाब व
गरिमा,
सारे जग में अद्भुत खग गौरैया।

घर आंगन में आती जब
गौरैया,
खुश होते बच्चे और उनकी
मैया।

–सुरेश विद्यार्थ,
उपाध्यक्ष :जिला हिंदी साहित्य
सम्मेलन औरंगाबाद ,
जिलाध्यक्ष:शब्दवीणाऔ.बाद
प्रदेश अध्यक्ष :राष्ट्रीय कवि
स्पर्श मंच बिहार
मो-9931628036

रख दो दाना पानी छत में

रख दो दाना पानी छत में, द्वारे रोशनदान की।
करनी होगी रक्षा हमको, गौरैया के जान की।
फुदक फुदक आँगन द्वारे में,
सुंदर नृत्य दिखाती।
चीं-चीं करके भूख-प्यास की,
हमको याद दिलाती।
चाहे काकुन चावल दे दो, दे दो टूटी धान की।
करनी होगी रक्षा हमको, गौरैया के जान की।
जाने कैसी कैसी धुन में, अपना गीत सुनाती।
दाना पानी मुँह मे लेकर, नीड़ ओर उड़ जाती।
पेट पालकर शिक्षा देती, ऊँची रोज़ उडान की।
करनी होगी रक्षा हमको, गौरैया के जान की।
आंगन से दाना चुनकर वो, फुर्र सदा उड़ जाती।
पेड़ों की डाली में छिपकर ,
कलरव खूब सुनाती।
पेड़ बिना संकट में जीवन ,
चिंता करो कटान की।
करनी होगी रक्षा हमको, गौरैया के जान की।

आओ मिलकर वृक्षारोपण, का अभियान चलाएँ।
एक-एक पौधे की सेवा, मन से करते जाएँ।
आज जरूरत है इस पर भी,
रंजन अनुसंधान की।
करनी होगी रक्षा हमको, गौरैया के जान की।

–राजेश तिवारी"रंजन"
बाँदा ,उत्तर प्रदेश

गौरैया

चीं-चीं करती गौरैया आ जाती,
आकर हमें प्यार से देखो रोज
जगाती।
दिल कहता आवाज और सुनते
रहे,
वह गौर से हमें देख कुछ कहते
रहती।।

प्रकृति से जुड़ा है तेरा यह
जीवन,
देख सभी को लगती है
मनभावन।
सारे घर में फुदक-फुदक कर
करती शोर,
गौरैया को प्यार करते हम
अंतरमन।।

छोटा-सा एक महल अनोखा
प्यारा-सा,
तिनका-तिनका उसने चुन के
बनाया।
प्रयासरत रह बच्चों को
सुरक्षित रखती,
बच्चों पर अपना ढेर सारा प्यार
लुटाया।।

अजीब-सा सन्नाटा दिखता
चारों ओर,
छाई उदासी गहरी मन में भी
कुछ घोर।
जिनसे थी रौनक हमारे अंगना
की,
कब आयेगी लौट के खुशियां
हमारी ओर।।

गौरैया बोल रही बसाऊ कहाँ
बसेरा,
मनुष्यों ने छीन लिया हमारा
प्यारा डेरा।
लुप्त हो रही गौरैया चिंतन
करना होगा,
नहीं तो सिर्फ चित्र में होगा
दर्शन तेरा।।

–अणुव्रत सेवी प्रो. डॉ.
ललिता बी. जोगड़, मुम्बई

गौरैया

ईश्वर का तुम हो उपहार,
सब जन तुमसे करते प्यार।
फुदक-फुदक नृत्य दिखलाती,
सबके हृदय को तुम भातीं ।।

प्रदूषण से तुम घबरातीं,
नील -गगन में मौज मनातीं।
कुदरत है तुम से गुलजार,
मानव करता तुमसे प्यार।।

अमृत बेला सैर को जातीं,
मधुर सुहाना राग सुनातीं।
तृण मूल से नीड़ बनाकर,
चोंच में भरकर दाना लातीं।।

वृष्टि में तुम धूम मचाती,
'पर' से आनन को सुखातीं।
फुर्र से उड़ती आसमान में,
नीलाम्बर में गुल मचातीं।

सांझ ढले जब घर को आतीं,
दाना चुग त्वरित सो जातीं।
यह क्रम चलता बारम्बार,
सब करते हैं तुमसे प्यार।।

-------नीलम रानी सक्सैना

मेरे ऑंगन की गौरैया (चौपाई)

मेरे ऑंगन की गौरैया
करती देखों ता-ता-थैया
फुदक फुदक कर नाच दिखाती
करती देखों छम्मक-छैया।

इसकी मीठी बोली सुनकर
दाना देती इसकी मैया
पढ़ना-लिखना नहीं जानती
पार लगाती अपनी नैया।

सरल-सहज स्वभाव है इसका

सीधी ऐसी, जैसे गैया
सबका ही यह मन बहलाती
सबको भाती है यह भैया।

गौरैया (हाइकु)

गौरैया प्यारी
हमारे ऑंगन की
है फुलवारी।

दाना है लाती
चोंच में दबाकर
खाना है खाती।

गौरैया आई
देखकर उसे तो
मुन्नी मुस्काई।

गौरैया रानी
अजब सी कहानी
सुनाती नानी।

वृक्ष लगाओ
धरती को सजाओ
पंछी बचाओ।

गौरैया (सायली छंद)

मनभावन
घटा में
छा रही हरियाली
गौरैया बैठी डाली।

सुनो
गौरैया रानी
उड़ जाओं जल्दी
पड़ रहा
पानी।

घर
के ऑंगन
बना है देखो
गौरैया का

आसन।

सुगंध
से महका
मनोहर सा चमन
गौरैया चाहती
अमन।

दाना
चुगने आती
पलक झपकते ही
फुर्र हो
जाती।

---नीलम रानी सक्सैना
जनपद-रामपुर ,उत्तर प्रदेश
सम्पर्क सूत्र -7599404774

गौरैया प्यारी

1--
मेरे आंँगन की गौरैया,
तुम फुदक-फुदक कर आती
हो।
नन्हे-नन्हे पर को फैला कर,
फुर्र कहांँ तुम उड़ जाती हो।।

खिड़की पर बैठ सदा ही तुम,
मधुरिम स्वर गीत सुनाती हो।
कहीं दिखे दाना पानी तो,
चुपके से चोंच दबाती हो।।

मैंने देखा तुम्हें घोसले,
दाना-पानी नित लाती हो।
नन्हे-नन्हे बच्चों को हरदम,
बड़े प्रेम से रही खिलाती।।

मेरी मांँ मुझको भी ऐसे,
हर पल ही प्यार जताती।
जब मैं रूठ कभी जाती हूंँ,
बड़े प्यार से हमें मनाती।।

माँ के नीर रखे बर्तन में,
तुम तो डूब नहाती हो।
सत्य कहूंँ छोटी चिड़िया
तुम,
मेरे मन को अति भाती हो।।

दूर चली जाकर के तुम तोे,
मुझको बहुत सताती हो।

मुझको यही बता दो कैसे ,
मेरे बिन तुम रह पाती हो।।
2--
कुछ गौरैया मैंने पाली।
चीं-चीं चूँ-चूँ करने वाली।।
दो छत के ऊपर हैं रहती।
दो नीचे कमरे में बसती।।

जोड़ी उनकी बड़ी निराली।
उठा-उठा कर लाती डाली।।
उससे फिर घोंसला बनाती।
तिनका-तिनका बीन बिछाती।।

उसमें ही बच्चों का पालें।
प्रेम भाव की आदत डालें।।
जब भी दाना मांँ बिखराए।

इनको है आवाज लगाए।।
बच्चे सब हैं पंख हिलाते।
ऊपर नीचे आते जाते।।
मात-पिता जो लेकर आते।
उसको सब मिलकर हैं खाते।।

सदा एकता बच्चों रखना।
कभी न लड़ना और झगड़ना।।
जो भी मिले बांँट के
खाएंँ।
गौरैया यह हमें सिखाएँ।।

3--
नन्ही सी है एक चिरैया।
नाम पड़ा उसका गौरैया।।

फुदक-फुदक कर घर में घूमें।
चूजों को अपने वह चूमें।।

रूप सभी के मन को भाता।
कलरव उसका बहुत सुहाता।।

घर-घर में पहले रहती थी।
नहीं किसी से वह डरती थी।।

समय चक्र पर घूमा ऐसा।
दिखे नहीं पल अब है वैसा।।

चीं-चीं चूँ चूँ करती थी जब।
जाने कहाँ हुई वह गायब।।

आओ मिलकर अलख जगाएँ।
गौरैया को वापस लाएँ।।

स्वयं घोंसला चलो बनाएँ।
चहक वही हम फिर से पाएँ।।

4–
बचपन के जैसी दिखे नहीं,
अब वह गौरैया रानी।
पहले जैसा मिले न खाना,
मिले न पीने को पानी।।

वृक्ष काट सब महल बनाए,
घर की छत भी हैं पक्की।
बना घोषला कहीं न पाए,
इत-उत घूमे भौचक्की।।

तिनका-तिनका उठा उठाकर,
अपनी जगह बनाती थी।
फुर-फुर करके वह आती थी,
फिर फुर से उड़ जाती थी।।

दिखे नहीं अब सोन चिरैया,
फुदक-फुदक जो चलती थी।
हम जोली जैसी बनकर वह,

संग सभी के रहती थी।।

ढूंँढ-ढूंँढ कर इसको लाएँ,
करें व्यवस्था हम सारी।
फिर से आंँगन में आ चहकें,
अपनी गौरैया प्यारी।।

-डॉ गीता पांडेय "अपराजिता"
सलोन, रायबरेली ,उत्तर प्रदेश

गौरैया रानी आ जाओ......

गौरैया रानी आ जाओ। अपना
सुंदर नीड बनाओ।।
चाहे छत पर घर के कोने, में
आ स्वेच्छा से बस जाओ।।

सूना पन से ऊब चुका मन,
तुमसे मेरी नहीं है अनबन,
मान न इतना करो मानिनी,
तोड़ भी दो अब अपना
अनशन,
चीं -चीं चूं -चूं बोलो जी भर,
हर्षित होकर गाना गाओ।।
गौरैया रानी आ जाओ।।

प्याली में रख दूंगा दाना,
इच्छा हो जितना वह खाना ,
एक कटोरा रखूंगा पानी, प्यास
जब लगे तो पी जाना ,
रोक-टोक कोई न करेगा,
इच्छा जब हो,आओ-जाओ।।
गौरैया रानी आ जाओ।।

तुमसे होता घर उजियारा,
अच्छा है परिवार तुम्हारा,
बच्चे साथ तुम्हारे खेलें,
तुमसे उनको मिले सहारा, दूर-
दूर से फुदक-फुदक कर,
नहीं हमारा मन भरमाओ।।
गौरैया रानी आ जाओ।।

छत के कोने में हैं तिनके,
धागा कपड़ा रखा हुआ है,
कष्ट तनिक भी तुम्हें न होगा,
टाट का टुकड़ा बिछा हुआ है,
तनिक नहीं संकोच करो तुम,
हमको मीठा गीत सुनाओ।।
गौरैया रानी आ जाओ।।
****

डॉ ब्रजेन्द्र नारायण द्विवेदी
शैलेश,डी-199 बजरंग नगर
,अशोक पुरम, वाराणसी
221011
8127880111

मेरे घर की गौरैया

भोर सवेरे सवेरे मेरे,
घर आंगन में आती,
एक नन्ही सी चिड़िया रानी।
आंगन में वो फुदकती रहती,
चहचह कर चुगती दाना,
कभी इधर तो कभी उधर,
उड़ वो छत पर पीती पानी।
रोज आती संग लाती अपनी,
सारी सखी सहेलियां जो,
मिलकर सब गुनगुनाती,
मीठे मीठे राग भरे गीत गाती।
आंगन में चीरी गौरैया का ,
आना लगता बड़ा सुहाना,
बंधी डोर रस्सी पर वो
नन्ही चिड़ियां डोल डोल,
खूब झूला झूलती रहती,
नन्ही चिड़ियां रानी आंगन में,
नहीं किसी से वो शर्माती।
नन्ही चिड़ियां का अपना भी,
क्या जीवन है उसका,
उड़ती नील अंबर आसमां में,
कोसों कोसों दूर दूर वो,
भटकती रहती ठंड ,गर्मी
,बरसात,
हर मुश्किल में भी वो नन्ही,
चिड़ियां कभी नहीं घबराती।

भोर सवेरे सवेरे मेरे आंगन में,
आती गौरी चिरैया नन्ही, नन्हीं
सी
चिड़िया रानी मन को भाती।

–पेंटर दिनेश चन्द्र जाटव
रूपारेल जावद,जिला नीमच
म,प्र,
मो ,917923393

गौरैया

प्रकृति की अनुपम चित्रकारी
का सबूत है गौरैया,
छोटी सी काया है |
किन्तु रूप है बेहद निराला,
जब -जब भी घर पर है आती |
वातावरण को खुशनुमा है बना
देती,
अपनी सुरीली है आवाज से |
सबका मन है मोह लेती,
इंसान इस पक्षी के लिये आज
बेहद है तरसते |
यादों में कैद इस पक्षी को,
आज सभी है बेहद याद है
करते |
आज गौरैया कहीं लुप्त सी
हो गयी है,
बढ़ते प्रदूषण व बढ़ती
जनसंख्या के कारण |
शायद गौरैया आज भेंट चढ़
चुकी है,
लगातार बदलती इस दुनिया
में |
लगातार विकास के रास्ते पर,
बढ़ती इस दुनिया में |
आज यह बेजुबान छोटा सा
पक्षी,
सिर्फ इंसानों की यादों में ही
है सिमट कर रह गयी है |

–रजत त्यागी
जिला -मुजफ्फरनगर
राज्य - उत्तरप्रदेश

प्रकृति की सहचरी-गौरैया

बचपन की सुखद स्मृतियों मे,
रची-बसी गौरैया है।
इसके कुंजन के बिन अब, हर
घर-आंगन सूना है।
बचपन की साथी को, चलो
वापस ले आते हैं ।
प्रकृति की सहचरी के हम,
चलो सहचर बन जाते हैं।

हमने काटे बाग बगीचे, सूनी
कर दी क्यारी।
गुलदस्ते मे फूल सजाया, सूख
गयी फुलवारी।
पीपल, बरगद ,नीम के पेड़,
हम फिर से लगाते हैं।
प्रकृति की सहचरी के हम,
चलो सहचर बन जाते हैं।

सहमी-सहमी है गौरैया, ठौर
नही पाती है।
एक माँ है अपने चूजों का, कौर
नही पाती है।
अपने सहज प्रयासों से , इसे
मिलकर बचाते हैं।
प्रकृति की सहचरी के हम,
चलो सहचर बन जाते हैं।

इनकी उपस्थिति घर में, सुख-
समृद्धि है लाती।
इनका न होना प्रकृति
का,असंतुलन दर्शाती।
पर्यावरण के इस प्रहरी के, हम
रक्षक बन जाते हैं।
प्रकृति की सहचरी के हम,
चलो सहचर बन जाते हैं।

–जयन्ती शुक्ला
शिक्षिका -गोरखपुर

गौरैया

ओ चिड़ियाँ आंगन में आना
पानी पिना, दाना खाना
फुदक फुदक कर तुम खुश
होना
मन को तुम मेरे हर्षाना
मैं तुमको नित दाना दूंगी
तुमसे मै भी कुछ सीखूंगी
श्रम तुम नित करती रहती हो
लगता नही कभी थकती हो
तिनके चुन चुन कर तुम लाती
बच्चो के हित निड़ बनाती
अंडो से जब बच्चे झांके
चहक चहक कर तुम इठलाती
संग में रक्षक बन कर रहती
उड़ना तुम उनको सिखलाती
चिड़ियाँ तुम हो बड़ी सयानी
सबके मन को भाती हो
उड़ती रहती निल गगन में
लौट सांझ को आती हो।

–सौ. कल्पना सेठी "कला"
नागपुर

"वो नन्हीं सी गौरैया"

वो नन्ही सी गौरैया
जैसे मेरी प्यारी बिटिया।

धूल में नहाना उसका,
और फिर पंख झटकना।

दीवार की उस दरार में,
चुपके से जा दुबकना।।

गुलदस्ते के पीछे छिपकर,
जब वो आँख मिलाती है।

सारे घर की कड़वाहट को,
मीठा कर जाती है।।
घर का एक सदस्य बेखौफ
उड़ान उसका,
कभी आईने के सामने खुद को
ही निहारती हैं।
प्यारी सी शरारत: कभी पुराने
अखबारों को अपनी चोंच से
संवारती हैं।।

अनकहा रिश्ता: वो कोई
मेहमान नहीं,
घर की ही एक कड़ी है।
सुनसान पड़े कोनों में,
वही तो रौनक बन खड़ी है।

तिनकों का वो छोटा महल,

जो उसने छत पर बनाया है।
लगता है खुशियों का कोई,
पैगाम घर में आया है।।

मत जाने देना इसे दूर,
ये बचपन की निशानी है।
इस छोटी सी चिड़िया में ही,
जैसे मेरी बेटी की कहानी है।

—रमेश साहू
मुंगेली छत्तीसगढ़

गौरैया दिवस मनाएं

पानी दाना थोड़ा खाना,
 पक्षियों को हमें है बचाना।
यह है प्रकृति के अनमोल
धरोहर,
रखें इससे अपना पन ,
विलुप्त होते पंछी को फिर से,
 वापस लाए,वापस लाए,
 चलो हम गौरैया दिवस मनाएं।
 चलो हम गौरया दिवस
मनाएं।।
चू चू करती जब गौरया,
 मेरे घर के आंगन में घूमें,
फुदक -फुदक कर इधर-उधर ,
घूमे- फिरे उड़े फर -फर ,
चावल का दाना मुंह में दबाए,
 थोड़ा खाए थोड़ा लेकर उड़
जाए।
चलो हम गौरया दिवस मनाएं।
 चलो हम गौरया दिवस
मनाएं।।

—नीलम दुबे नीलू(कवयित्री)
गोरखपुर,उत्तर प्रदेश

गौरैया --

मेरे आंगन आयी गौरैया
नन्हे पंख फैलाए
फुदक, फुदक कर दाना चुगें
मीठे गीत सुनाए।
सुबह, सुबह जब सूरज निकले
चहक,चहक कर जगाए।
पेड़ों की डाली पर बैठी
खुशियों की धुन गाएं।
छोटी सी पर प्यारी चिड़िया
सबके मन को भाए।
गौरैया की मीठी बोली
सबके मन को भाए।

चिड़िया और चुरुगुंन----

चिड़िया से कह रहा चुरुगुंन
होगा कैसे गुजारा
पीपल,आम,पलाश कट गये
कट गया जंगल सारा
बड़े, बड़े बन गये भवन अब
ईंट और पत्थर जोड़ के
पशु, पक्षी सब दूर चले गए
अपने जंगल छोड़ के
उड़ गए तोता, मैना दोनों
छोड़ के वन की माया
अब नहीं नाचेगा मोर कभी
कोयल नहीं गायेगी गाना
खेत और खलिहान उजड़ गये
कैसे खायेंगे दाना
प्राणवायु की कीमत समझें
पेड़ लगाए घना, घना।

------ पुतुल मिश्रा, सिलीगुडी, पश्चिम बंगाल

मेरे अंगना की गौरैया

जब देखी तस्वीर ये न्यारी
याद आ गयी बचपन की
जब देखा करते थे हम सब
आस पास दिखती गौरैया

कितनी प्यारी कितनी न्यारी
भूरे काले पंखों वाली
फुदक रही अंगना गौरैया
कभी मुंडेर पे पानी पीती
कभी दाना चुगती गौरैया
दिन भर हम सब के संग रहती
खेल रही अंगना गौरैया
बीता वक्त हुआ विकास
कट गए सारे पेड़ हरे
उद्योगों का बिछ गया जाल
बेघर हो गयी वो गौरैया
काश वक्त फिर वापस आए
आ जाए वापस गौरैया
फुदक फुदक कर झूम झूम कर
अंगना में खेले गौरैया
अंगना में प्यारी गौरैया।।
अंगना .....।।

निहारिका झा
खैरागढ़ राज.(36गढ़)

मुक्तक 1

चहचाहती छोटी चिड़िया
व्यस्त, घरेलू गौरैया कहते हैं
घरों के करीब रहने वाली जो
एक साथ में रहते हैं
शहर और गांव दोनों में, इनकी
प्रजाति पाई जाती हैं।
घर में रौनक रहने से, बढ़िया
गीत सुनाते हैं।

2

ए बेहद मिलनसार पक्षी,
अक्सर झुंड बनाते है।
गौरैया गोदाम के अंदर, अपना
जीवन बिताते हैं।
गौरैया की आवाज बहुत सुंदर,
चहचहाहट गायन अच्छा
लगता है।
गौरैया छोटी फुर्तीली चिड़िया,
घर में गीत सुनाती हैं।

—डॉ.रामनिवास तिवारी
आशुकवि निवाड़ी ,मध्यप्रदेश

गौरैया

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी आंगन में आती है,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी चहचहातीं हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी पानी में खेलती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी हमको दिखती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी झुण्ड में उड़ती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी दुआर पर आती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी दाना चुगती है,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी हमको दिखती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब हमको नहीं दिखती हैं,
मन व्यथित हो जाता हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी परेशान होती हैं,
मन व्यथित हो जाता हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी भूखी होती हैं,
मन व्यथित हो जाता हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब प्यासी रह जाती हैं,
मन व्यथित हो जाता हैं।।

सबसे प्यारी अपनी गौरैया,
जब भी आंगन में आती हैं,
मन को खुश कर जाती हैं।।

–सत्यम उपाध्याय
M.A.–इतिहास
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल –९९८४७५३८९८

"गौरैया"

गौरैया आसमान को छूकर उड़कर आती है,
दूर गगन में अपना छोटा सा घर बनाती है।
आँगन में दाना लेने फिर लौट आती है,
मीठी चहचहाहट से खुशियाँ फैलाती है।

विलुप्त होती जा रही है, सूना है आँगन,
याद दिलाती है बचपन का प्यारा सा जीवन।
चहकती चिड़ियों को देख मन मुस्काता है,
प्रकृति का सुंदर रूप सबको भाता है।

झुंड में उड़कर जब छूती है आसमान,
कितना प्यारा लगता है ये सुंदर जहान।
पेड़ों में घोंसला बनाकर करती है निवास,
दाना-पानी रख बचाएँ, यही है अपना प्रयास।

—-किरण सेन, छत्तीसगढ़

"गौरैया "

गौरैया हमारी संस्कृति की पहचान,
नन्ही-सी चिड़िया, सादा सा मान।
आँगन-आँगन फुदकती फिरती,
हर घर की थी ये मधुर मुस्कान।

मिट्टी की खुशबू संग आई,
छप्पर-दीवारों में घर बसाई।
दादी की कहानियों में बसी,
बचपन की यादें संग लाई।

चू-चू की मीठी - मीठी तान,
जागे हर सुबह का अरमान।
इसके संग ही जीती-जागती,
प्रकृति का मधुर मंगल गान।

अब ये हमसे दूर न हो जाए,
आओ इसका मान बढ़ाएँ।
दाना-पानी रखकर घर में,
फिर से इसे पास बुलाएँ।

गौरैया सिर्फ एक चिड़िया नहीं,
हमारी संस्कृति की शान है।
इसे बचाना, सहेजना ही,
हम सबका पावन अरमान है।

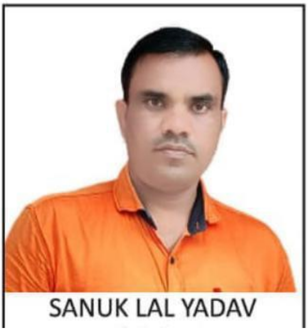

✍सनुक लाल यादव
मलाजखंड,जिला बालाघाट, मध्य प्रदेश

"गौरैया "

चंचल, चपल, छोटी-सी चिड़िया,
चहक-चहक चहुँ ओर बढ़िया।
फुदक-फुदक फूलों पर फिरे,
फुसफुस फुहारों में धीरे- धीरे।

नन्ही, नटखट, नीरव नभ में,
नित नए नर्तन रचती रम में।
तिनका-तिनका तनकर लाती,
तरु-तरु तट पर घर बनाती।

मधुर, मनोहर मीठी बोली,
मंद-मंद मुस्कानें मधुरस घोली।
गोरैया गुनगुन गान सुनाए,
गांव गली के गौरव गाए।

भूरे - भूरे पंख पसारे,
आते नित्य सांझ सकारे।
पेड़ों पर फुदक फुदक गाती,
तिनका-तिनका जोड़ लाती।

सुबह-सुबह जब सूरज आए,
मीठी बोली सबको भाए।
कितनी प्यारी, कितनी न्यारी,
हम सबकी है ये गोरैया प्यारी।

– सनुक लाल यादव
मलाजखंड जिला बालाघाट
मध्य प्रदेश

छोटी गौरैया

ऐ गौरैया कहाॅं छुपी हों,
कितनी सुंदर प्यारी हों।

छोटी-छोटी प्यारी न्यारी,
मखमल से सुंदर पंख तेरे।

कितनी सुंदर डिजाइन बनी,
फूदक -फुदक कर आती हैं।

बच्चों को पालने के खातिर,
चुन -चुन दाना तूं लातीं हैं।

कितना बड़ा झुंड था तेरा,
अब क्यों नहीं तूं दिखती हैं।

हमें पता हैं बिजली के तार,
टी बी टावर के कारण ही।

बिगड़ें हुए हालात तुम्हारे,
कभी कैरेंट से मरती हैं तूं।

मानवता स्वार्थी हो गई हैं,
सिर्फ अपनी सुविधा देखें।

ऐ गौरैया कहाॅं छुपी हुई हैं,
अब तो सामने आ जाना।

चोंच में तिनका लेकर जाती,
छोटे सुंदर घोंसले बनातीं हैं।

दाना लेकर उड़ती है तूं तो,
कुछ दाने धरा पर गिरते हैं।

उनसे ही तो खेतों में फसल,
खुद व खुद उग जाती हैं तब।

जीवन तूं देती हैं सबको ही,
लेकिन तूं तो अनमोल गौरैया।

– किरन अग्रवाल
प्रतापगढ़ यूपी

प्यारी गौरैया

छोटी सी प्यारी गौरैया
आना मेरे पास
फुर्र-फुर्र उड़कर,
दाना चुगकर
रहना मेरे पास
हरा भरा यह उपवन सारा
बन जाए फिर खास।
चीं-चीं की गूंजे जब इसमें
मधुर-मधुर आवाज।
विश्व गौरैया दिवस पर
आज आओ कर लें प्रण
करें प्रबंध दाना पानी का
और थोड़ी सी हरियाली का
गौरैया का करें संरक्षण
विलुप्त होती इस प्रजाति का।

–शालिनी श्रीवास्तव
'सनशाइन'
शिक्षिका,लेखिका,कवयित्री
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

गौरैया रानी

गौरैया पंछी बड़ी सुहानी।
उनकी है सुंदर कहानी।।
भूरे-भूरे पंखों की रानी।
फुदकना उनकी निशानी।।

पेड़ों पर घोंसला बनाती।
सुंदर सुरीली राग सुनाती।।
सुबह- शाम चू-चू करती।
घर आँगन वह फुदकती।।

गौरैया रानी की बात है ख़ास।
होती इंसानों की आस-पास।।
उन्हें चाहिए पानी एक कटोरा।
भीषण गर्मी जीने का सहारा।।

ईश्वर का सुंदर उपहार।
प्रकृति है इनसे गुलज़ार।।
गौरैया रानी की बड़ी मान।
संस्कृति है उनकी पहचान।।

बिजली तार पर पंक्ति लगाती।
फुर्र - फुर्र कर वह उड़ जाती।।
गौरैया की बात निराली ।
लगती ये सब को प्यारी ।।

इधर - उधर लगाती फेरा।
बढ़ते प्रदूषण उन्हें घेरा ।।
डालो उन्हें थोड़ा सा दाना।
लगा रहेगा छत आना- जाना।।

✍लतेलिन लता प्रधान चांपा
जांजगीर छत्तीसगढ़

मेरे घर की गौरैया

मेरे घर की नन्हीं गौरैया
हर सुबह ऑंगन में आती,
चूॅं-चूॅं करके गीत सुनाकर
खुशियों की है धूप जगाती।

फुदक-फुदक कर दाना चुगती
और चोंच से पानी पीती,
डाली पर फिर बैठ अचानक
मुझसे अपनी बातें कहती।

कभी खिड़की पर है बैठती
कभी छत पर नृत्य दिखाती,
पंख फैलाकर नभ में उड़ती
मुक्त गगन की राह बताती।

भर नन्हे पंखों में साहस
दूर गगन में है मंडराती,
शाम लौटती जब वह थककर
मधुर चहक से दिल बहलाती।

मेरे घर की प्यारी गौरैया
स्नेह भरी है सरल,सुकोमल,
सुनकर उसकी चहक मदभरी
हर उदासी हो जाती ओझल।

–विश्वानि देव अग्रवाल

बरेली उ. प्र.

जीवन गौरैया

'जीवन गौरैया का'
रंग भूरा, आकार है छोटा,
नाम है उसका गौरैया।
झुंद में रहना पसंद करती है,
दाने, कीड़-मकोड़े खाती है।
घर के छत पर करती है फर -फर,
घर में होता है कलकल।
जब आता गरमी का मौसम,
सूना हो जाता उसका जीवन।
पीने- नहाने को न मिलता पानी,
दुखी हो जाती गौरैया रानी।
सुरू होने वाली है गरमी,
चलेगी लू , होगी गौरैया सहमी।
चलो छत-आँगन में रख दें पानी,
जिसे पीकर बचे गौरैया रानी।
अगर बच जाएगी प्यारी गौरैया,
सूक्ष्म जीवों को खा जाएगी,
घर-आँगन में चहचहाएगी,
स्वच्छ होगा पर्यावरण।

–पिंकी मिश्रा, पश्चिम बंगाल

गौरैया,चुनमुन्नी

क्षितिज के ऊपर अंबर के नीचे।
चूह चूहाती नन्ही अपनी ओर खींचे।
घर में घर के अंदर ऊपर वह रहती।
चहक चहक क़ुहुक कुहक कुछ कहती।
कितनी सुंदर नन्ही सी प्यारी।
हसती खेलती रहती सबसे न्यारी।
शुभ सूचक बसंत का सुखद रहा बोल।
गौरैया पक्षी वसुधा पर खड़ा अनमोल।
अब तो पर्यावरण में ख्याल कहां तक खिंचे।
कहां चली गई जो रही खुशियली के पीछे।
यह छोटी सी चिड़िया में रहा सदा नयापन।
घर में रहकर घर के भीतर भी अपनापन।
धरा पर आंखें ढूंढ रहा अब मिल ना पाई।
विलुप्त होने के कगार पर तब याद आई।

पता नहीं कहां कहां वह कैसे अब रहती।
अपनी व्यथा वह किसे किस तरह कहती।
प्राकृतिक छटाओं का उज्जवल पहचान।
गौरैया पक्षी के बिना घर लगता सुनसान।
मैं खोज रहा हूं कहां वह मिल पाए।
हसते खेलते दुनिया में फिर आ जाए।
प्यारी नन्ही सी मेरे बचपन में मेरे पीछे।
चूह चूहातो गोरेया ध्यान अपनी और खींचे।

– संतोष कुमार राय ,अधिवक्ता व्यवहार न्यायालय रोसरा। ग्राम पोस्ट   भीरहा ,थाना रोसरा जिला समस्तीपुर।

गौरैया

बरामदे में बैठी गौरैया,
बच्चे को दाना देती है,
अंडों को सेकर,
उड़ना सिखाती है, और

छोड़ देती है,
उन्मुक्त आकाश में विचरने,
उन्हें अपना घौसला बनाना
होगा

खुद को धूप वारिश से,
बचाना होगा दाना-पानी का
जुगाड़ करना होगा,

बरामदे में बैठी गौरैया,
बिना बोले कह देती है,
कि, अब तुम्हें छोड़ना होगा,
एक माँ को।

–विजया द्विवेदी "विजयश्री"
सागर ,मध्यप्रदेश ,भारत

गौर चिरैया

ओ री पंछी प्यारी गौर चिरैया
तू कितनी भोली -भाली
चींचीं करती दाना चुगती
मेरे आंगन की गौर चिरैया
तिनके -तिनके ला घोंसला बनाती
अपने नन्हें बच्चे को उड़ना सिखाती
चाहती फुदकती गौर चिरैया
कभी फुदकती पंखे पर तो कभी खिड़की पर
फुदकती फिरती यहां वहां
फुर -फुर उड़ कर जा बैठती
नन्हें बच्चों के संग
बच्चों को चोट से चुगा खिलाती
गौर चिरैया
बच्चों को खूब भाती गौरैया
खूब प्यार करें नाच -नाच कर
जैसे चुहचुहाती है अपने घोंसले में
ओ री गौर चिरैया क्यों नहीं गाती
अब तुम मौसम के गीत
अपने बच्चों को भी सिखा देना
संग संग चहचहाना और नाचना
तूने बखूबी निभाया है अपने बच्चों के प्रति कर्तव्य
तू कहां लुप्त हो गई

तेरे बिना घर आंगन लगता है सूना
खाली खाली लगता है घर का हर कोना
सदा तू रहे आबाद ओ री चिरैया
फिर से तू आंगन की बगिया को गुलजार कर दो

—डॉ मीना कुमारी परिहार

चिड़िया गौरैया

मेरे घर आंगन में ,चहक रही
चिड़िया गौरैया।
घर में, बगिया में फुदक रही
,नन्ही चिड़िया गौरैया ।
छत पर रखे सिकोरे में ,पानी
पीती है गौरैया।
आंगन में बिखरे खाने और
दाने खाती गौरैया।
घोसले में रखें अंडों से, निकले
चुजों - बच्चों को पाल रही है
गौरैया।
दाना लेकर जाती, बच्चों को
खिलाती है गौरैया।
बच्चे भी घोसला से बाहर मुंह
खोले बैठे हैं ,खिला रही मां
गौरैया ।
पेड़ पर बैठकर चू -चू गीत
सुनाती गौरैया ।
अन्न के संग ,पौधों के कीड़े भी
खाती है गौरैया।
हमारी फसलों, पेड़ों को, कीड़ों
से बचाती नन्ही गौरैया।
हमारी मित्र है ,यह छोटी सी
चिड़िया गौरैया ।
गर्मी में पेड़ों तले या डालियों
पर टांगकर सिकोर से ,पानी
पिलाओ, तभी बचेगी गौरैया।
पेड़ है रैन बसेरा ,पेड़ों को
बचाओ, तभी खुश होगी

चिड़िया गौरैया।
कंक्रीट भवनों ने, उजाड़े वन -
जंगल, लुप्त हुई शहरों से
गौरैया।
गांव की हरियाली में
,खुशियाली बांट रही है
चिड़िया गौरैया।
बड़े होकर चूजे- बच्चे उड़
जाएंगे, अकेली रह जाएगी फिर
माँ चिड़िया गौरैया।
मेरे घर आंगन में चहक रही,
फुदक रही प्यारी गौरैया।

–डॉक्टर शशिकला अवस्थी
इंदौर, मध्य प्रदेश

फुदक फुदक

फुदक फुदक कर मेरे घर आंगन
में
चींचीं करती आई चिड़िया,
कभी अटारी , कभी बड़ेर पर
तिनके चुन चुन नीड़ बनाई
चिड़िया।

कभी फर्रफर , कभी फुर्रफुर
सारे घर में इधर उधर मंडराती
चिड़िया,
दादी के डलिया से लेकर
अनाजका दाना जाती चिड़िया।

आंगन के नल पर आकर
गर्मियों में खूब मजे से नहाती
चिड़िया,
कभी बारिश के आने से पहले,
दर,रज पर खूब इठलाती
चिड़िया।

मेरे घर के छज्जो से नन्हे-मुन्ने
बच्चों संग
कलरव राग सुनाती चिड़िया,
आंगन के आईने में आकर
हर रोज सजती सवरती
चिड़िया।

जब कभी छज्जो से गिर जाते
बच्चे,
अजब तरकीब लगा कर पास
बुलाती चिड़िया,
और पास बिलौटे को आते ही,
मन से खूब रिझाती चिड़िया।

वरुण कुमार दुबे
Gorakhpu,Uttar Pradesh

1. चहचहाहट कहाँ गई?

—शाहाना परवीन 'शान'

सुबह सवेरे गूंजा करती,
मस्ती में चहका करती।
आज वो चहचहाहट कहाँ गई?
गौरैया की मीठी धुन
शहर में कहीं खो गई।

पेड़ों की जगह बन गई इमारतें,
सीमेंट का ये जंगल बस गया।
न तिनके, न वो डाल रही,
शोर का संगम बन गया ।
गौरैया की मीठी धुन
शहर में कहीं खो गई।

कहीं दूर से आती गौरैया,
ढूंढती है जब अपना घर।
हर जगह मिलते बंद दरवाज़ें,
फूल, डालियों का नहीं कोई वृक्ष।
इधर- उधर उड़ती, पंख फैलाती,
निराश होकर बेचारी उड़ जाती।
गौरैया की मीठी धुन
शहर में कहीं खो गई।

स्वार्थी मनुष्य ने,
सारे वृक्ष काट लिए।
नहीं सोचा एक बार भी
गौरैया के पंख काट दिए।
क्यों भूल बैठा मानव कि
वो भी तो इस धरती की,
एक प्यारी सी रचना है,
क्यों किया उसको खुद से अलग,
गौरैया हम सबका सपना है।
गौरैया की मीठी धुन
शहर में कहीं खो गई।

मत भूलो कि यह धरती
हम सबकी जननी है।
गौरैया भी इस धरती की
प्यारी सी एक कृति है।

आओ मिलकर हम
कसम हैं खाएँ,
फिर से गौरैया को बुलाएँगे,
छोटे-छोटे दाने रखकर,
उसका घर हम बसाएँगे।
उसका घर हम बसाएगें।

2. नन्हीं सी गौरेया

नन्ही सी गौरेया
आँगन में मेरे आती है,
फुदक-फुदक कर
नाच दिखाती,
अपना गीत सुनाती है।
दाना देख मुस्काती है
फुर्र से उड़ जाती है।
नन्ही सी गौरेया,
आँगन में मेरे आती है।
छोटी सी चिड़िया है,
लगती शर्मीली सी,
पंख हिलाकर चहकती रहती
लगती रंगीली सी।
फुदक फुदक कर,
सबका दिल बहलाती है।
नन्ही सी गौरेया
आँगन में मेरे आती है।।

3. हिम्मतवाली गौरेया

छोटी सी चिड़िया लगती बहुत प्यारी है,
हिम्मत से बढ़ती आगे लगती निराली है।
यदि तुम कभी अपने मार्ग से भटक जाओ,
डरकर कहीं रुक कर, तुम विचलित हो जाओ।
तो याद कर लेना एक बार गौरेया को,
उसकी हिम्मत और आत्मविश्वास को।
छोटी सी चिडिया लगती बहुत प्यारी है
हिम्मत से बढ़ती आगे लगती निराली है।

एक कहानी सुनाते हैं हम सबको
गौरेया ने बनाया था घर बताते हैं सबको।
तिनका - तिनका जोड़कर सपने सजाए थे,
दिन रात मेहनत कर फूल खिलाए थे।

आँधी और तूफान ने उसका घर मिटाया था,
गौरैया ने किया सामना फिर घर सजाया था।
डटी रही, डरी नहीं हिम्मत से आगे खड़ी रही,
नदी में चट्टान बनकर गौरैया बही नहीं।
छोटी सी चिडिया लगती बहुत प्यारी है
हिम्मत से बढ़ती आगे लगती निराली है।

4. **गौरैया कुछ कहती है..**

मैं नन्ही सी हूँ गौरैया,
कुछ कहना चाहती हूँ,
मैं नन्ही सी हूँ गौरैया,
तुम्हारे आगँन में
फिर से आना चाहती हूँ।
एक शिकायत मेरी है मानव से,
तुमने पेड़ गिरा दिए सारे,
कहाँ बनाऊँ मैं अपना नीड़?
कहाँ बैठूँ, कहाँ से देखूं मैं तारे?
किसी सुनाऊँ अपनी पीड़ा?
कहाँ जाऊँ, कहाँ गाऊँ?
उडकर बैठूँ डाली -डाली
पेड कहाँ से लाऊँ?
मैं भी हूँ एक माँ
मेरे भी बच्चे होते हैं।
रहते घोंसले में बच्चे
घोंसले पेड़ों पर ही सजते हैं।
मनुष्य ने जब-जब घर बनाए,
मैनें अपना घर खोया है,
तुमने सुख की नींव रखी,
मैंने हर पल दर्द संजोया है।
समय बहुत कम है मानव
अब भी समझ जाओ,
मुझको भी जीने दो,
और खुद भी तुम जी जाओ।
थोड़ी सी छाँव, थोड़ा दाना - पानी,
बस इतनी सी है मेरी कहानी।
मैं नन्ही सी हूँ गौरैया,
कुछ कहना चाहती हूँ,
मैं नन्ही सी हूँ गौरैया,
तुम्हारे आगँन में
फिर से आना चाहती हूँ।

—शाहाना परवीन 'शान'..✍
मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

गौरैया

आंगन की रौनक नन्ही सी जान,
प्यारी गोरिया मेरी शान।

फुदक फुदक कर वह आती है,
मीठे गीत सुनाती है।

तिनका तिनका जोड़ बनाया,
छज्जे पर घरौंदा सजाया।

चीची कर सबको जगाती,
आलस सारा दूर भगाती।

कंकड़ चुनती दाना खाती,
पंख फैलाकर वह उड़ जाती।

धूप सुनहरी उसे सुहाये,
धूल में अपनी प्यास बुझाये।

मिट्टी में वह खूब नहाती,
पंख झटक कर है इतराती।

बिल्ली से है सदा डरती,
छुप-छुप कर है बातें करती।

मेरे आंगन का वह तारा,
सबको लगता रूप ने प्यारा।

छोटा सा उसका शरीर,
पर उड़ती जैसे कोई तीर।

प्रकृति का अनमोल उपहार,
देती सबको ढेर सारा प्यार।

इसे बचाना फर्ज हमारा,
यह पक्षी है सबसे न्यारा।

सुनकर इसकी चहचाहट,
घर में होती बड़ी बूगाहट।

आओ हम सब मिलकर ठाने,
इस जीव की कीमत पहचाने।

–पंडित मुल्क राज "आकाश"
गाजियाबाद उत्तर प्रदेश
8010239638

मेरे घर की गौरैया

मेरी छत की गौरैया, तू कितनी
प्यारी है,
चहचहाती है सदा, मेरे दिल
की कड़ी है।
तेरी चंचलता, तेरी मधुर ध्वनि,
मेरे जीवन को भर देती है, एक
नई कहानी।

तू छत पर नाचती, तू छत पर
गाती,
मेरे दिल को सुकाती, मेरी
आँखों में बसी है।
तेरी पंखुड़ियाँ, तेरी आँखें
काली,
मेरे दिल को खींचती, एक
अनजानी गली।

तू मेरे जीवन की, एक प्यारी
साथी है,
मेरे दिल की धड़कन, मेरी
जिंदगी की राही है।
तू मेरे साथ रहे, सदा मेरे पास
रहे,
मेरी छत की गौरैया, तू मेरे दिल
की आवाज है।

तू मेरे जीवन को, एक नया
अर्थ देती,
मेरे दिल को भर देती, एक नई
उमंग से।
तू मेरे साथ रहे, सदा मेरे पास
रहे,
मेरी छत की गौरैया, तू मेरे दिल
की आश है।

—अवध किशोर मिश्र,
लखनीखाप, औरंगाबाद
बिहार.
मोबाईल-9097223860

गौरैया

हर आंगन की शान है गौरैया,
सभी के दिलों में बसती है
गौरैया..
चिड़िया उड़ का खेल,खिलाती
है गौरैया,
दादी के दानों में, धमा-चौकड़ी,
मचाती थी मेरी गौरैया...
बस अब तो यादों में ही,
रह गये हैं वो दिन, और मेरी
गौरैया...

****

वो फुदकती गौरैया

मेरे ऑंगन की शान थी,
वो फुदकती गौरैया..

चूं-चूं करती,दाना चुगती,
वो फुदकती गौरैया..

मुनिया की थी पक्की सहेली,
वो फुदकती गौरैया..

गर्मी में एक छा◌ॅ◌ंव
तलाशती,
वो फुदकती गौरैया..

बारिश में एक ठौर ढूंढती,
वो फुदकती गौरैया..

सीमेंट के जंगलों में खो गई,
वो फुदकती गौरैया..

दिल को खूब सुकून देती थी,
वो फुदकती गौरैया..

कोई फिर से लौटा कर ला दे,
वो फुदकती गौरैया...।

—--सुषमा अग्रवाल
नागपुर ,महाराष्ट्र

मेरे घर की गौरैया

मेरे घर की गौरैया मेरी सहचरी
थी,
मेरे ही साथ मेरे घर में रहती थी।
सुबह चीं चीं की आवाज से नींद
खुलती थी,
चीं चीं की आवाज लगती थी
बड़ी मनभावन।

विलुप्त हो रही थी इनकी जाति
पर्यावरणविद मोहम्मद दिलावर
के प्रयासों से
20 मार्च बना गौरैया दिवस।

जागरूकता बड़ी है लोगों में
बनाई लकड़ी के बुरादों से घर,
बढ़ने लगी है गौरैया की संख्या
यह है एक शुभ संकेत।

लौट आओ गौरैया तुम बिन
आंगन सूना लगता है,
मेरे आंगन में गौरैया फिर से रोज़
आना रे!
इन्तजार में बैठी हूँ अनाज जल
लेकर जल्दी से अब आ जा रे!

मनमोहक है तुम्हारा घोंसला
कैसे इसको बनाती हो
समझ गई मैं नैसर्गिक रुप से तुम
इसको बनाती हो
तभी तो इतना इठलाती हो।

क्या सच में गायब हो गई हो
या हमें डरा रही हो?
एक आशंका बन कर रह गई हो।

—शिवली गोस्वामी

नन्हीं गौरैया

गौरैया अब मेरे आंगन आती
नहीं ,
अब वो आकर चहचहा ती भी
नहीं ,
सुबह उठते ही उसका खिड़की
पर आकर बैठना ,
ओर चहचहाना अब वो
सुनाती भी नहीं ।

गौरैया का रोज छत पर आकर
बैठना ,
फुदक फुदक कर ची ची करते
रहना ,
एक दूसरे के ऊपर चोंच मारते
रहना ,
अब वह कुछ दिखता भी नहीं ।

आंगन के पेड़ों की डालों पर
उसका बैठना ,
अब कभी कभी दिख जाता
है ,
उसके झुंड जैसे गायब हो गए ,
वह भी खामोश सी हो गई है ,
इसलिए घर आंगन में फुदकना
भूल गई है ।

कमरे में लगे आईने पर बैठकर
चोंच मारना,
ओर उसमें खुद को देखकर ,
जोर जोर से ची ची करना,
जैसे अपना चेहरा देखना भी
भूल गई है ।

वो कमरों में लगी तस्वीरों के
पीछे,
तिनका तिनका इकट्ठा कर
चुपके से,
अपना घोंसला बनाना भी भूल
गई है,
मेरी प्यारी गौरैया हमारा घर
छोड़ गई है।

छतों पर उसके लिए रखा दाना
पानी खाती थी,
सकोरे का दाना पानी खत्म हो
गया तो,
कमरे में आकर चह चहाकर
इशारा कर जाती थी,
मां एक पल में समझ जाती थी,
छत पर दाना पानी रख आती
थी।

आज मेरी प्यारी गौरैया जैसे
रूठ गई है,
हमारा घर ,द्वार, शहर सब छोड़
गई है,
नन्हीं गौरैया को वापस बुलाना
है,
दाना पानी खिलाना है,
सीमेंट कॉन्क्रीट के जंगल की
जगह,
शहर में हरियाली लाना है,
तभी मेरी नन्ही गौरैया आयेगी,
छत पर रखा दाना पानी
खाएगी,
हां मेरी नन्ही गौरैया आयेगी
मेरी नन्ही गौरैया जरूर आएगी।
❦■❦■
–डॉ संजय कुमार मालवी
आदर्श, इंदौर

गौरैया

~~

विश्व गौरैया दिवस,
बीस मार्च शुभ बेला।
फर्र-फर्र करके आती,
लग जाता जैसे मेला।।

दादी जब उन्हें बुलाती,
महक उठे घर आंगन।
चिं-चिं कर प्यार लुटाती,
नन्हीं सी पर मनभावन।।

घास-फूस का घोंसला,
समझ नहीं कोई पाया।
वास्तुकला रूप-सौंदर्य,
जन-जन के मन भाया।।

मात्र एक मुट्ठीभर दाना,
फिर देखो उनका तमाशा।
खुशियों का अटूट भंडार,
पास नहीं आये हताशा।।

जैवविविधता अपनापन,
अपना फर्ज निभाओ।
पर्यावरण प्रेमी बनकर,
गौरैया को बचाओ।।

—रामबाबू शर्मा,
राजस्थानी,दौसा[राज.]

गौरैया

अपने आंगन मे इनको बुलाया
करो।
अपने चौखट की शोभा बढ़ाया
करो।।
मेरे बच्चों सी प्यारी ये लगती
मुझे,
इनको दिल मे तुम अपने
बसाया करो।।
जिसके आंगन मे गौरैया ये
जाती नहीं ।
उसके घर मे है खुशियाँ भी
आती नहीं।।
आप इनको जरा सा प्रेम
दीजिये,
बरकत देने मे ये है सकुचाती
नही ।।
धान से चावलो को अलग
करती है।
घर के आंगन मे नित ये अलख
करती है।।
नीर- क्षीर जैसा गुण इनमे भी
बसता है,
बुराई से अच्छाई को बिलग
करती है ।।
प्रेम का दीप दिल मे ये जलाती
रही।
चिट्ठी पाती प्रेम की ये लाती
रही।।

दो दिलो को मिलाने की चाहत
रही,
गीत भी प्रेम के ये है गाती रही।।
कोई भी पटल कवि स्पर्श जैसा
नहीं।
प्रेम मे होता सब कुछ है पैसा
नहीं।।
हमने दुनिया मे देखा बहुत है
मगर,
पक्षी देखा है गौरैया जैसा नहीं।।

–नीरज यादव (खिचडी
सम्राट)
मिश्रिख ,सीतापुर ,उत्तर प्रदेश

गौरैया

(हाइकु)

गौरैया आओ
हमारे आँगन में
फुदक जाओं

नन्ही चिड़िया
मेरी प्यारी गौरैया
है चहकती

छत पर है
तुम्हारे लिए दाना
खाने आ जाना

चहकती हो
फुदकती हमेशा
नन्हीं गौरैया

स्वागत तेरा
गौरैया घर मेरा
नित आ जाना

निवेदिता सिन्हा
गया जी, बिहार

मेरे घर की गौरैया

मेरे घर की नन्ही गौरैया,
खिड़की पर आ बैठती है,
धीरे-धीरे मीठी बोली,
मन को मेरे छू लेती है।

सुबह की पहली किरण संग,
जब सूरज मुस्काता है,
उसकी प्यारी चहचहाहट से
पूरा घर जग जाता है।

कभी दाने की खोज में,
आंगन-आंगन घूमती है,
कभी छत की मुंडेरों पर,
खुशियों के गीत बुनती है।

तिनकों का वो छोटा घर,
मेहनत की मिसाल बनाता,
हर छोटी सी कोशिश से वो,
जीवन का पाठ पढ़ाता।

अब तो जैसे रूठ गई है,
कम ही नजर वो आती है,
सूना-सूना लगता घर,
जब वो पास न आती है।

आओ फिर से प्यार दें उसे,
पेड़ लगाएं, दाना रखें,
मेरे घर की प्यारी गौरैया,
फिर हर दिन हमसे मिलने आए।

–अमरेन्द्र कुमार मिश्र
पथार गडहनी भोजपुर
बिहार

गर्मी में मेरी गौरैया

गर्मी का मौसम आया है,
धूप ने रूप दिखाया है,
तपती छत और सूनी डाली,
प्यास से जग घबराया है।

ऐसे में मेरी नन्ही गौरैया,
धीरे-धीरे आ जाती है,
छत की ओर नज़र उठाकर,
कुछ उम्मीद जगाती है।

मैं रख देता दाना-पानी,
मिट्टी के उस छोटे पात्र में,
वो चोंच डुबोकर पीती जल,
ठंडक भरती अपने अंतर में।

दाने चुनकर, फुदक-फुदक कर,
खुशियों का गीत सुनाती है,
मेरी छोटी सी ये सेवा,
उसके मन को भाती है।

आओ हम सब मिलकर अब,
एक नेक काम कर जाएं,
हर छत पर दाना-पानी रख,
गौरैया को जीवन दे जाएं।

नन्ही सी ये चिड़िया प्यारी,
हमसे ही तो आस लगाए,
थोड़ी सी देखभाल से ही,
फिर हर आंगन चहक जाए।

–अमरेन्द्र कुमार मिश्र
पथार गडहनी भोजपुर
बिहार

मेरे घर की गौरैया

बचपन की साथी गौरैया
भोर की पहली किरण
 के साथ ,ऑंगन में चहचहाकर
मुझे जगाती
फुदक- फुदक कर,मटक-मटक
कर संग मेरे खेलती
पेड़ो से ऑंगन में,फुर्र से आना
औंर चोच में दाना लेकर
ठुमकती
बरामदे की खिड़की पर
तिनका- तिनका जोड़कर
अपना घोसला बनाती
बरखा में छम-छम कर ऑंगन
में खूब धूम मचाती
ची- ची चिरैया, मासूम- सी मन
को हर्षाती
फसलो का संवर्धन करती
ईश्वर औंर सृष्टि की अनमोल
धरोहर को बचाये
वफादारी,मेहनत, साहस
,सौभाग्य, समृद्धि की प्रतीक
प्यारी गौरैया को अंगना की
शोभा बनाना हैं
आओ सब मिल गौरैया को
बचाना है
मोबाइल रेडिएशन औंर वायु
प्रदूषण को भगाना है
वसुंधरा को हर- भरा करना है

हमारी प्यारी गौरैया को फिर से
चहकाना हैं।।

–श्रीमति- वन्दना शास्त्री"राही"
गांधीनगर (गुजरात)

नन्हीं सी चिड़िया गौरैया

गौरैया नन्हीं सी चिड़िया,
घर-आँगन की शान है,
उसकी मीठी चहचहाहट,
सुबह की पहचान है।
फुदक-फुदक कर दाना चुनती ,
छत-दीवारों पर आती है ,
तिनका-तिनका जोड़-जोड़कर,
अपना घर बनाती है ।
नीम, पीपल की डालों पर,
मधुर गीत ये गाती है,
सादगी भरी इसकी दुनिया,
सबके मन को भाती है।
बचपन की वो प्यारी यादें,
इसके संग जुड़ी रहती,
खिड़की पर जब ये बैठती,
खुशियों की लहरें बहती,
पर अब कम होती जाती हैं।
शहरों में खोती जाती हैं।
पेड़ों की कमी और प्रदूषण,
इसकी राहें रोकते जाते।
आओ मिलकर प्रण ये लें,
इसको फिर से बसाएँगे,
दाना-पानी रखकर हम,
गौरैया को बचाएँगें।।

–पंकज पाण्डेय शिक्षक एवं लेखक
बांसगांव, गोरखपुर

दोहे - घर-घर की गौरैया

छोटी सी प्यारी लगे, आती घर
में रोज।
दाने आं◌ँगन में पड़े,खाती
उनको खोज।।

सबके घर आया करे, शुभता
रही बिखेर।
इससे प्रेम बढ़ाइए, करिए
तनिक न देर।।

गौरैया जैसी सरल, अब न दिखे
हर ओर।
घर भर में फुदका करे, चूँ-चूँ
करती शोर।।

गौरैया आती नहीं, अपने पंख
पसार।
भूल गए करना सभी, इसको
प्यार दुलार।।

गौरैया दिखती रहे, हम सब करें
प्रयास।
पेड़ निरंतर कट रहे, चिड़िया
हुई उदास।।

–ओम प्रकाश खरे , जौनपुर।

गौरैया !
बेटी सदृश हो तुम मेरी

नम्र निवेदन है गौरैया
मेरे घर में आओ तो
तेरे लिए रखा है दाना
आकर के कुछ खाओ तो।

क्यों मुझसे नाराज हो गई ?
किस बीहड़ में,कहाँ खो गई?
कैसे और किस हाल में है तू?
मुझे जरा बतलाओ तो।

आओ मेरी प्रिय गौरैया
बेटी सदृश हो तुम मेरी
घर आँगन में फुदको आकर
पिता का दर्द मिटाओ तो।

तेरी बात पिताश्री मानूँ
हरे पेड़ मत कटवाना
बनाऊँगी मैं अपना घोंसला
नए पेड़ लगवाओ तो।

–नागेन्द्र त्रिपाठी
गाजियाबाद / वाराणसी उत्तर प्रदेश

पक्षी बचाव

लेकर आस कुछ दानों की,
गौरैया मुंडेर पर आती है।
सूना- सूना सा भोर हुआ,
अब न चिड़ियाँ चहचहाती है।।

रख लो छत पर जल की
कटोरी,
पंछियों को भी अन्न दान करो।
करो बंद मोबाईल एकाक घड़ी,
रेडिएशन से न पंछी तमाम
करो।।

गौरैया न कोई पंछी बचा नभ
में,
नेट रेडिएशन से सब मर जाते
है।
न मुंडेर पर अब जल की
कटोरी,
हर पंछी भी प्रवासी बन जाते
है।।

जब बसंत का भी आनंद
उठाते,
चिडियों का कलरव न सुनाते
है।
कैसा बसंत का मनभावन
मौसम,

चीं-चीं चिड़ियों की न भोर
जगाते है।।

आओ मिल सब कुछ इंतजाम
करें,
मिले पल दो पल सुबह शाम
करें।
कुछ रखे छत अन्न जल की
कटोरी,
पंछी बचाव में कुछ अभियान
करें।।

–बसंत श्रीवास "वसंत"
(नरगोड़ा)
रामकृष्ण मिशन आश्रम
नारायणपुर
छत्तीसगढ़

गौरैया की चाहत

गौरैया की चाहत में छिपा है
उसकी का जीवन।
गौरैया को चार दाणों, पानी के
साथ मिले निश्छल जीवन।।
चाहत में चाह रही है टावर तरंगों
से सुरक्षित जीवन।
गौरैया की उछलकूद संग बच्चों
का बीते बचपन।।
मिट्टी के घरों के घोसले बढ़ाती
रहे उसकी धड़कन।
कुर्सी, मेज, सोफों में उछलने से
पांवों में थिरकन।।
हरे बांसों के झुरमुट में प्रभात
बेला में चहके जीवन।
दाणों की जंग में कबूतरों के संग
ना बीते जीवन।।
मानुष की वही खिलखिलाहट
भरे प्राणों में धड़कन।
जिंदगी में जिंदादिली चाहते
गौरैया का हो संरक्षण।।

-हीरा सिंह कौशल
गांव व डाकखाना महादेव
तहसील सुंदरनगर जिला मंडी
हिमाचल प्रदेश मोबाइल
9418144751

गौरैया चहकती मिले

आप भी रहें, हम भी रहें
पेड़-पौधे, जीव सभी रहें
विकास हो ऐसा समावेशी
जिसमें न कोई वंचित रहे।

हरा-भरा रहे देश-धरा हमारा
सबका हो उचित भरण-पोषण
गौरैया चहकती मिले आसपास
रचती दिखे अपना सुंदर सा घर।

संतुलित हो प्रकृति का रूप
जीवन बना रहे सबका मधुर, अनूप
न हो प्रकृति का अतिदोहन ऐसा
अस्त-व्यस्त दिखे अनुकूलन का रूप।

–राजेश स्वर्णकार

मेरे आंगन की गौरैया

मेरे घर के आंगन में आती,
एक नन्ही-सी सुंदर गौरैया।
चूँ-चूँ करती फुदक-फुदक कर,
भर देती खुशियों की माया।

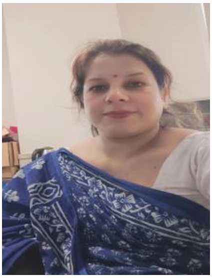

सूरज संग जब आँखें खोले,
नई सुबह का गीत सुनाए।
दाने चुनकर ये छोटे-छोटे,
जीवन का अर्थ सिखाए।

तिनका-तिनका जोड़ कर,
अपना सुंदर नीड़ बनाए।
धैर्य, साहस और लगन का,
मीठा सा संदेश सुनाए।

ना कोई शिकायत होठों पर,
ना मन में कोई अँधियारा।
मेरे घर की प्यारी चिड़िया,
होता घर में अब जगियारा।

–मंजू चौधरी
ग्रेटर नोएडा

हम प्यासे पंछी दया करो

दया करो, दया करो,हम प्यासे
पंछी दया करो।
रोज सवेरे खुली जगह पर, एक
बर्तन पानी धरा करो।
दया करो,दया करो,हम
बेजुबान प्राणी दया करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी
हम,बस एक कटोरा भरा करो।

कम या ज्यादा जो मिले हम,
अपना गुजारा कर लेंगे।
उड़ते भटकते राहों में, जो भी
दाना मिलेगा चुग लेंगे।
सिर्फ खाने से ही कैसे
जीयेंगे,कोई,ऐसा भी सोचा
करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी हम,
बस एक कटोरा भरा करो।

सूखे पड़े हैं नदी नाले, जाएँ तो
जाएँ कहांँ अब हम।
एक भरोसा इन्सान ही
तेरा,प्यास से निकल रहा है
दम।

सिर्फ तेरे पास ही तो है पानी,
तुम ही दयालु दया करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी
हम,बस एक कटोरा भरा करो।

इस अगन सी गरमी में, पशु-
पक्षी कितने ही तड़प रहे।
बिना पानी के तड़प-तड़प कर
कितने ही तो मर भी गये।
जिन्दा बचे हैं जो भी जीव
'मुथा', उनकी जान बक्शा करो।
ज्यादा नहीं मांँगे पानी
हम,बस एक कटोरा भरा करो।

कवि छगनलाल मुथा-
सान्डेराव
मुम्बई

लौट आओ गौरैय्या रानी

लौट आओ गौरैया रानी
तुम्हारी याद सताती है
सुगढ़ सलोनी मंद हवाएं
गीत तुम्हारे गाती हैं 1

छोटे - छोटे पंख तुम्हारे
सबके मन को भाते थे
चूँ- चूँ करते होंठ तुम्हारे
सबको खूब लुभाते थे 1

सुंदर पैनी चोंच तुम्हारी
मन में टीस उठाती है
कंचे जैसी आँख तुम्हारी
मन में प्यास जगाती है 1

जरा बोलो तो गौरैय्या रानी
घोसला कहाँ बनाती हो
बर्षों बीते,दिखी नहीं तुम
बापस क्यों न आती हो 1

लौट आओ गौरैय्या रानी
घर सूना सा लगता है
बिना तुम्हारे खिड़की पर
घोसला एक न सजता है 1

–डॉ. अजय बैरागी "बिरक्त"

गौरैय्या ~~~

फटी हुई दादी की चादर
पड़ी हुई है खाट पर
गुमसुम सी दादा की लाठी
खड़ी हुई कपाट पर l

फुदक फुदक कर गौरैय्या
कमरे मे घुस आती थी
दादी के सुपड़े से लगकर
दाने चुगकर जाती थी l

सुबह सबेरे गौरैय्या जब
आँगन में शोर मचाती थी
ठक ठक लाठी की सुनकर
फुर्र फुर्र उड़ जाती थी l

नीड़ बनाकर खिड़की पर
कई कई अंडे देती थी
बैठ नींड़ के ऊपर अक्सर
दिन भर अंडे सेती थी l

लुप्त हुई नट-खट गौरैय्या
वृक्षों की पैनी शाखों से
खोज रही है दुनिया उसको
मन की सूनी आँखों से l

-डॉ.अजय बैरागी बिरक्त
___ डिंडौरी म.प्र. ___

गौरैया मेरे आँगन की

मेरे आँगन में गौरैया, फुदक-
फुदक कर आती है।
चहक-चहककर, उछल-
उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती
है।।

नन्ही-नन्ही, प्यारी-प्यारी,
लगती सुंदर सी न्यारी।
चीं-चीं करती मधुर मनोहर,
भोली छवि उजियारी।।
जब मैं उसे पकड़ना चाहूँ, पास
नहीं वह आती है।
चहक-चहककर, उछल-
उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती
है।।

इसकी भाव-भंगिमा देखो,
चंचलता पावन मधुरिम।
वह प्रभात की कोमलता में,
नाचे बारिश में रिमझिम।।
नन्हे-नन्हे पंख पसारे, वह मुँडेर
चढ़ जाती है।
चहक-चहककर, उछल-
उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती
है।।

तिनके-तिनके से नीड़ बनाकर,
उसमें अंडे देती है।
अपने प्यारे बच्चों को वह,
गर्मी देकर सेती है।
मुख में दानों को ले आकर,
उनको नित्य खिलाती है।
चहक-चहककर, उछल-
उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती
है।।

माना कि वह बेजुबान है, फिर भी वह अनजान नहीं है।
इसकी समता करे जो कोई, ज्ञानी चतुर सुजान नहीं है।
माँ की ममता की वह मूरत, खुशहाली भर लाती है।
चहक-चहककर, उछल-उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती है।।

विहग वृन्द की करें सुरक्षा, आओ हम तुम साथी।
अनुपम कृति अनमोल प्रकृति की, नवजीवन संघाती।
भोली-भाली गौरैया नित, आँगन को महकाती है।
चहक-चहककर उछल-उछलकर, फुर्र-फुर्र उड़ जाती है।।

सुखनन्दन प्रजापति
'सुख'
कोल्हूडीह, सीधी (म.प्र.)

सोन चिरैया

ओ री मेरी सोन चिरैया,
जाने कहाॅं गयी गौरैया।
बुला रही है मेरी मैया,
घर-ऑंगन आ जाओ गौरैया।।

रख दुॅंगा मैं दाना- पानी,
फिर से आओ चिड़िया रानी।
मूंडेर पर फिर बना लो घोंसला,
तुमको खोजती मेरी नानी।।

ची ची चिड़िया

ची ची चिड़िया बोल रही,
शहर में नहीं बसर।
प्रदुषण और कीटनाशक ने,
जीना किया दुभर।
मोबाईल टावर के पावर ने,
जीना किया हराम।
मुझे भी जीने दो मानव,
कितना झेलूं कहर।।

–संजय हजारीबागी
हजारीबाग, झारखंड

गौरैया की पाती

गौरैया अब भी आती है,
पर धीरे से बैठती है छज्जे पर,
जैसे घर पहचानने की कोशिश
कर रही हो।

हमारे शोर में उसकी आवाज
खो जाती है,
और वो बिना शिकायत उड़
जाती है।
शायद उसे अब भरोसा नहीं
रहा,
कि हम पहले जैसे लोग हैं,
जो दाना नहीं, अपनापन दिया
करते थे।

गौरैया अब भी आती है,
पर धीरे से बैठती है छज्जे पर,
जैसे घर पहचानने की कोशिश
कर रही हो।

हमारे शोर और अदृश्य तरंगों में
उसकी नन्ही धड़कन उलझ
जाती है,और वो बिना शिकायत
उड़ जाती है।

शायद उसे अब भरोसा नहीं
रहा,
कि हम पहले जैसे लोग हैं,
जो दाना नहीं, अपनापन दिया
करते थे।

-शिव प्रताप यादव
(प्रधानाध्यापक)
बांसगांव ,गोरखपुर

गौरैया

छोटी सी पक्षी
पेड़ों पर घोंसला बनकर
रहती है गौरैया
यह धैर्य के प्रतीक होती है।

ग्रामीण प्रांतों में दिखाता
शहरी प्रांतों में कम दिखाता
किसानों के पसंद होती गौरैया
यह फसलों में कीटाणु को मरती
है।

सफेद रंगों कुछ गौरैया
भूरा रंगों में कुछ गौरैया
उसकी नाक पीली रंग
उड़ने केलिए पंख होती है।

चावल,बीज,फूल को खाती है
भीड़ों की तरह दिखाता है
वे घर के आंगन में चिल्लाती है
यह मधुर स्वर से ध्वनि करती है।

पेड़ों को नित काटने से
वायु कलुषित होने से
मोबाइल टवरों की ध्वनि से
गौरैया दिखाई नहीं पड़ती है।

-श्रीनिवास यन,आंध्रप्रदेश

मेरे घर की गौरैया

रंग-बिरंगी प्यारी
सुंदर -सुंदर न्यारी गौरैया
लगती बड़ी दुलारी,
रोज सबेरे घर में मेरे गौरैया जब आती थी
चहक -चहक कर, फुदक -फुदक कर सबका मन बहलाती थी
सारे घर को बुला-बुला कर अपनी शान दिखाती थी
मेरे घर के आँगन को चहकाती थी
मेरी प्यारी गौरैया
तुम कहाँ गुम हो गईं हो अब
इस शहर की भीड़ मे कहाँ खो गईं हो अब
घर मेरा सूना-सूना लगता है अब
बचाना अब है तुम्हें ये जिम्मेदारी हमारी है
पेड़, लगाए भीषण गर्मी से बचाए
गौरैया को घर अपने फिर से बुलाए

आओ मिलकर गौरैया बचाए
संकल्प लेकर पेड़ लगाए।।

-ऊषा जोशी
देवास, मप्र

पकड़ में न आती गौरैया

चीं चीं के स्वर सुबह सुबह
गुंजा करते हैं घर घर
अब यदा कदा सुन पाते
क्योंकि लुप्त हो रही गौरैया।

भूरे पटल धारी लाली
काली सुनहरी और प्यारी
सुंदर पंख चमकती आंखें
लिए फुदकती गौरैया।

हर घर में हर आंगन में
चावल के फैले कण को
चुगती चहकती दौड़ती
अपनो सी लगती गौरैया।

सिर से ऊपर लड़ती पड़ती
नहीं किसी से डरती है
तुम करो जतन चाहे जो,
पकड़ में न आती गौरैया।

–गोपाल मिश्र
सिवान, बिहार।

गौरैया और घोंसला

गौरैया तुम मन में रखती,
एक हौसला न्यारा सा,
बन जाये बच्चों की खातिर
एक घोंसला प्यारा सा।।

न डिग्री न पढ़ी किताबें
नही कहीं से शिक्षा पाई,
नीड़ बनाने का गौरैया
इतना ज्ञान कहाँ से लाई।

पंछी होकर भी तुम,सच्चा
माँ का फर्ज़ निभाती हो,
तिनका तिनका यहाँ वहाँ से
लाकर नीड़ बनाती हो।

ना चूना और ईंट न गारा
केवल बस इक चोंच से,
कितने सुंदर नीड़ बनाती
अद्भुत अपनी सोच से ।

सर्दी गर्मी वर्षा सहकर,
बच्चों की भूख मिटाती हो।
जब तक बच्चे बड़े न होते,
उनका साथ निभाती हो।

मेहनत क्या होती है भाई
आकर सीखो चिड़ियों से,
सच्ची ममता क्या होती है
जाकर सीखो चिड़ियों से।

✍अनुजा दुबे 'पूजा'

फुदक-फुदक कर

आ गौरैया आ जा,गीत प्यार के
गा जा।
फुदक-फुदक कर आँगन
भीतर,दाना-पानी चुग जा।

चीं चीं करती जब तू आती
आकर मुझको रोज उठाती
दिल कहता अब न जाना,
और जरा रुक जा..

तुमसे ही प्रकृति मनभावन
प्रकृति से तेरा यह जीवन
गर्मी अब होने को आई,
किसी छाँव छुप जा....

कितनी तुम मेहनत करती हो
पंख पसार उड़ती फिरती हो
अब तो वृक्ष लगे कटने,जा
कहीं और उड़ जा....

कभी न थकती कभी न रुकती
सदा काम में जुटी हो रहती
'पूजा' का सूना है आँगन,
फिर से तू आ जा...

–अनुजा दुबे 'पूजा'

लौटआई प्यारी गौरैया

चली गई थी दूर गौरेया,
पर फिर से लौट आई है।
दुनिया से वो रूठ गई थी,
हम सबसे वो टूट गई थी।
छत,आँगन को छोड़ गई थी,
दाना,पानी छोड़ गई थी।
पर फिर से वो लौट आई है,
चहुँ ओर खुशी छाई है।
चीं-चीं कर राग सुनाती,
फुदक-फुदक कर
नाच दिखाती I
पर फिर से वो लौट आई है।
दुष्ट-सज्जन को पहचाने,
मित्र-दुश्मन को वो जाने ,
पर फिर से वो लौट आई है।
अब ना इसको जाने देना ,
कहीं ना इसको खोने देना।
कर लो इसका संरक्षण ,
दे दो इसको प्यारा जीवन,
घर-घर बसा दो गौरेया,
यहीं है प्यारी चिरैया।

–श्रीमती मीनू चौधरी
बरेली(उ०प्र०)

गौरैया रानी

गौरैया रानी गौरैया रानी,
मेरे घर भी आओ ना।
अपनी मधुर आवाज,
हमें भी सुनाओं ना ,
तिनका-तिनका जोड़ के,
अपना घर बनाओं ना,
चीं चीं चीं चीं करके,
हमें भी जगाओं ना।
दाना चुगने आओ ना,
कीट,पंतगे खाओ ना।
सबके मन हर्षाओं ना,
पर्यावरण बचाओ ना।
घर आँगन को सजाओ ना,
खतरे से हमें बचाओ ना।
चींचीं का अलार्म बजाओ ना,
गौरैया रानी आओ ना,
मीठा राग सुनाओ ना।

3 **गौरैया को बसाना है**

गौरैया को बचाना है,
ऐसी मुहिम चलाना है।
घर आँगन पहुँचाना है ,
गौरैया को बसाना है।
चीं चीं की आवाज सुनाना है,
दुश्मन को भगाना है,
सबके मन हर्षाना है ,
गौरैया को बसाना है।
खुशियो को लाना है,
मधुर आवाज सुनाना है,
जीवन को बचाना है,
गौरैया को बसाना है।
पेड़ो को लगाना है,

प्रदूषण को भगाना है,
गौरैया को बचाना है,
गौरैया को बसाना है।

4 ***प्यारी गौरेया***

घर-आंगन में आती गौरैया,
दाल का दाना खाती गौरैया।
सबके मन को भाती गौरैया,
बच्चों की जान होती गौरैया।
फुदक-फुदक नाचती गौरैया,
चींचीं कर जगाती गौरैया।
तिनका-तिनका लाती गौरैया,
घोंसला बनाती गौरैया।
किसी से नही डरती गौरैया,
सबकी प्यारी होती गौरैया।
अब कहाँ छुपी हो गौरैया,
तुम बिन आँगन सूना गौरैया ,
गलती हो गई मानव से गौरैया,

माफ कर दो प्यारी गौरैया,
संरक्षण तुम्हारा करेगें गौरैया,
जीवन अपना सुधारेगें गौरैया।

5 गौरैया

छोटी सी चिरैया जिसे कहते गौरैया,
फुदक-फुदक कर आती गौरैया।
दाल का दाना खाती गौरैया,
मुंडेर पर जब बैठ जाये चिरैया।
सभी के मन को भाये गौरैया,
सुबह-सुबह चहचहाये चिरैया I
गाना हमें सुनाये रे भैय्या,
मन खुश हो जाये रे भैय्या।
पहले हर जगह पर नजर आये गौरैया,
अब संख्या में कम नजर आये रे भैय्या I
इसका जीवन सभी बचाओ रे भैय्या,
छत पर दाना,पानी रखो रे भैय्या ।
इसका संरक्षण करो रे भैय्या,
पेड़-पौधे अधिक लगाओ रे भैय्या।
घोसला इनका बनाओ रे भैय्या,
पर्यावरण में सहयोग करती गौरैया।
चीं चीं चीं चीं करती गौरैया,
सभी की लाडली है गौरैया I

–श्रीमती मीनू चौधरी
बरेली(उ०प्र०)

आंगन में गौरैया

1

मेरे आंगन में गौरया
फुदक फुदक कर
चलती है।
चू चू करके नन्हे चूजे
मां को देख निकलती है।।
कितनी सुन्दर कितनी प्यारी
सबके मन को भाती है।
अपनी ची ची भाषा से
लगती गाना गाती है।।
छत पर मैने रखे हैं दाने
उड़ उड़ करके खाती।
पानी पी-पीकर घोंसले में
जाकर के छुप जाती है।।
उनके रहनें से आंगन में
रौनंक सी आ जाती है।
कभी उपर कभी निचे
घर की फेरा लगाती है।।

2

गौरैया गांवों में रहते हैं
खाती दाना पिती पानी।
गले में काला वह है राजा
चिकनी दिखती वह रानी।।
पक्षी वन की संरक्षक हैं
पक्षी वन की शोभा हैं।
विविध रंग और विविध
प्रजाती

सुंदर हैं मन लोभा है।।
गुलर बरगद पिपल वृक्ष के
फल को जब यह खाती है।

कुछ पंजे में कुछ चोंच में
खा करके उड़ जाती है।
जहां भी यह विष्ठा करती है
पौधा उग कर आता है।
बरगद पिपल गुलर का
बड़े वृक्ष बन जाता है।।
पक्षी हमारे खलिहानों में
उड़ उड़ कर आती
हैं।
फसलो के दूश्मन किटों को
निज भोजन कर जाती हैं।।

–विद्या वाचस्पति गोवर्धन लाल बघेल

ग्राम टेढ़ीनारा बागबाहरा जिला महासमुन्द छत्तीसगढ

पक्षी गाथा

ग्रीष्मकाल की भीषण गर्मी से
सारा जग परेशान है।
पक्षियों को जल दाना दें
उसमें सब जैसी प्राण है।।
बुजुर्गों से सुना है हमने
अनुभव स्नेह जुबानी।
मानव और पक्षियों का
अद्भुत प्रेम कहानी।।
कबुतर संदेश वाहक बनकर
पत्र प्रितम को पहुचाते थे।
पुनः उत्तर लेकर उनके
वापस घर को आते थे।।
शिवा जी की बाज गगन में
पंख फैलाए उड़ता था।
शत्रु के छोड़े तीर को
पकड़ कर तेज मुड़ता था।।
रनिवास में रानीयां सब
तोता पाली करती थी।
मीठे-मीठे बात करते
रामायण पढ़ा करती थी।।
मां सिता का हरण हूआ जब
गीद्ध जटायु आया था।
सिता की रक्षा करने में
अपना पंख कटाया था।।
मोर पंख के बने मुकुट
श्रीकृष्ण धारण करते थे।

चक्रसूदर्शन धारी श्री हरी
गरूड़ का वाहन करते थे।।
संत शिरोमणी कागभुशुण्डि
कथा रामायण गान किया।
पक्षिराज गरुड़ बैठकर
अमृत रस का पान किया।।

–विद्या वाचस्पति गोवर्धन लाल बघेल

मेरे आंगन की गौरैया

मेरे आंगन की गौरैया, जाने अब कहाँ गई।
नन्हे पंखो से उड़कर, कहीं तो है छिप गई।।
याद है हमको वह दिन, आंगन में जब आती थी।
अपने छोटे पैरो से फुदक फुदक कर गाती थी।
चह चह चह चह करती रहती, मानो गीत सुनाती थी।
घूम घूम कर दाना चुंगती, फिर धीरे से उड़ जाती थी।।
झुण्ड बनाकर रहती थी सब, खोता भी लगाती थी।
बच्चों की वो प्यारी थी,बच्चों के मन भाती थी।।
मेरे आंगन की गौरैया, जाने अब कहाँ गई।
नन्हे पंखो से उड़कर, कही तो है छिप गई।।
त्याग सपस्या प्रेम समर्पण उसमे भी दिख जाती थी।
जब अपने नन्हे बच्चों को, चोंच से दाना खिलाती थी।।
पेड़ बगीचा ताल तलैया घर आंगन में रहती थी।
अब ये सारे लुप्त हो रहे,कहाँ ठौर उनको मिलती।।

पंख फड़फड़ा कर जल में, पँख भींग नहाती थी।
बदन को अपने ठंडा कर, दाना चूँगने जाती थी।।
एक मुठ्ठी धान की बाली दरवाजे पर लटकाते थे हम।
चिडियो का हिस्सा होता, जब फसल काट के लाते हम।।
कितने अच्छे थे वो दिन, जब पक्षी से भी नाता था।
नहीं था कोई दूरभाष यँत्र, मज़ा उन्ही से आता था।।
मेरे आंगन की गौरैया, जाने अब कहाँ गई।

नन्हे पंखो से उड़कर, कही तो है
छिप गई।।

-विनोद कुमार वर्मा

मेरे घर की गौरैया

वृक्ष सिर्फ ही वृक्ष नहीं हैँ,
जीवन का आधार हैँ।
गौरैया क़ी चह चह
होती,चिड़ियों का संसार है।।
घोंसला बनी डाली डाली पर,
घर आंगन में आती है।
कर आनंदित चुंग के
दाना,फ़ौरन ही उड़ जाती है।।
कर निनाद आंगन में मेरे,
सबका मन हर्षाती है।
छोटा कद छोटी है आंखे, कैसे
दाना पाती है।।
घर सारे अब महल हो गए,
आंगन का नहीं जमाना है।
पेड़ कट रहे पल हर पल,अब
इनका कहाँ ठिकाना है।।
बेचारे पशु और पक्षी, हमसे
कहाँ टकराएँगे।
तड़प तड़प कर बिन घोंसला,
ऐसे ही मर जायेंगे।।
न दाना न पानी है अब, गर्मी
अपरम्पार है।
किस मुँह से लिख डाले हम,
गौरैया से प्यार है।।
उजड़ा जिनका महल घरौंदा,
हाल उन्ही से पूछो तुम।
कितना कोई समझायेगा,वृक्ष
लगाओ धरा पर तुम।।
सबके पास अब दो दो मुँह है,
कैसे कोई बात करें।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे, अंदर
से ही घात करें।।
ह्रदय में अपने खुद ही सोचो,
कहाँ रहेंगे पशु पक्षी।
छुपे धरा पर श्वेत वेश में,नर
पिशाच और नरभक्षी।।
आंगन छोड़ अब छत पर
रखिये, थोड़ा सा दाना पानी।
कुछ शुकुन मिले चिड़ियों को,
इसमें न हो मनमानी।।
वृक्ष धरा को हरा बनाएं, प्राण
वायु भी देते हैँ।
फिर भी दुश्मन बन के ,उनका
जीवन हर लेते हैँ।
शोभा जग क़ी सबसे है, कीट
पतंगे पशु पक्षी।
तितली जुगनू कम हो गए,रक्षा
करनी है इनकी।।
बड़ बोली बड़ दिखलावे से,
काम न कोई होता है।
चालाक बने फिरता मानव,
बाकी सब कोई रोता है।।

कड़वी भाषा लगे किसी को,
माफ नहीं करना भाई।

अपने मन में प्रण कर लेना,
किसी से न डरना भाई।।
देख किसी को पेड़ काटते, चुप
मत रह जाना तुम।
पुलिस बुलाना भीड़ जुटाना,
पेड़ को बचाना तुम।।

मेरे घर की गौरैया

अरे ये छोटी सी
चिड़िया,आंगन में आकर गाये।
फुदक फुदक कर दाना
खोजे,सबके मन को भाये।।
चह चह चह चह करती रहती,
मन को हर्षाती।
एक एक कर दाना चुंगती, फुर्र
से उड़ जाती।।
नील गगन में पँख पसारे, बैठे
पेड़ की डाली।
सब खुश होते देख कर
इसको,बोली कितनी प्यारी।।
झुण्ड बनाकर आती है ये, घर
आंगन और द्वार।
जाड़ा गर्मी वर्षा झेलती, कभी
न माने हार।।

अपने काम में मस्त है रहती,
आहट से डर जाती।
छोड़ के अपना दाना पानी, झट
से उड जाती।।
कभी पानी में पँख फड़फड़ा
कर, बदन को ठंडा करती।
शोभा इससे घर आंगन की,
कई गुना है बढ़ती।।
कुछ ऐसा बदला है जग में,
संख्या इसकी घट रही।
नाम रहा *गौरैया* इसका,चिं
चि नहीं अब रट रही।।
धरा वृक्ष विहीन हो रही,
आश्रय इसका खो रहा।
नन्ही जान क्या ही कर ले, मन
इसका भी रो रहा।।
खेत में पड़ रहे कीटनाशक,
कैसे चारा खाये।
भूल हुई यदि थोड़ी सी तो,
खाते ही मर जाये।।
जीव जंतु पशु पक्षी, सबका
आश्रय मानव छीन रहा।
अपनी करनी अपना कफन
अपने ही हाथों बीन रहा।।
किसको किसको समझाओगे,
कौन मानने वाला है।
अपना हित सर्वोपरि रखना,
यही आज की शाला है।।

थोड़े से जो बचे हैं पक्षी, गौरैया
के नाम की।
थोड़ा दाना पानी छत पर, उनके
बहुत काम की।।

–विनोद कुमार वर्मा
गोरखपुर उत्तर प्रदेश
7355037440

गौरैया— एक मीठी चहचहाट

आयी गौरैया आयी गौरैया
देख कर नाचे बहन और भैया !!
नर गौरैया पहने सलेटी रंग का ताज
मादा करे अपने घोंसले के निर्माण का काम काज !!
कभी वह दाना ले कर जाती !
गर्मी में पानी में नहाती !!
सदा जितनी भूख उतना ही खाती
इंसान की तरह ना भंडार भर रखती राखाती !!
कभी दूसरी मित्र गौरैया सैंग चहचहाती !
कभी अकेली ख़ुशी से झूमती गाती !!
बच्चों के सैंग खेलती पर किसी के हाथ ना आती !
फुदक २ आकाश में दूर उड़ जाती !!
प्रकृति की हरियाली की थी वह उपासक !!
इंसान ने बना के पक्के घर छीन ली उसकी विरासत !!

अगर हम ने सुननी है गौरिया की मीठी आवाज !
तो करना होगा हम सब को निष्ठा पूर्वक शुरू एक पर्यास आज !!

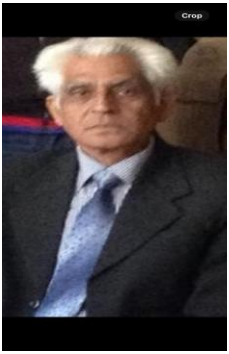

जियादा से जियादा लगा कर पेड़ शुद्ध रखें वातावरण को !
सब कुछ स्वच्छ रखें ना दूषित करें पृथ्वी के आवरण को !!
फिर दिखेगी चहचहाती गौरैया ही गौरैया सब ओर !
सुनेगी उनकी मीठी आवाज़ चाहे हो शाम या भोर !!

— सुलक्षण शर्मा
११०३–विओला अल्बा
नाहर अमृत शक्ति
चाँदीवाली ,मुंबई—४०००७२

मेरे घर की गौरैया
सृजन संख्या:-१

गौरैया छोटी बहुत, लेकिन उम्दा काम।
चींचीं करती हर घड़ी,दे मन को आराम।।१।।

बना घोंसला एक लघु, जीवन करे व्यतीत।
जीवन के हर मोड़ पर,दोष करे अपनीत।।२।।

गौरैया भू के लिए, एक सुघड़ उपहार।
सीधी-सादी जीव यह,करे सहज व्यवहार।।३।।

करती है यह आचरण, नित्य प्रकृति अनुरूप।
सबको भाती है सदा,रंक रहे या भूप।।४।।

गर्मी,बरखा,शीत ऋतु, चाहे हो मधुमास।
खुशियाॅं देती हर घड़ी, इसीलिए यह खास।।५।।

सृजन संख्या:-२
मेरे घर की गौरैया
कुंडलियाॅं

गौरैया उड़- उड़ करे,सबका मन बहलाव।
नहीं किसी से यह करे, बिल्कुल कभी दुराव।।
बिल्कुल कभी दुराव,भाव अच्छी है रखती।
नेह मेह की वृष्टि,करे फल सुंदर चखती।।
कहें ' मधुर ' कविराय, छंद में लगे सवैया।
नैसर्गिक वरदान,मही पर है गौरैया।।१।।

लघु तन पर मन से बड़ी, गौरैया की सोच।
गौरैया देती नहीं, कोई कभी खरोंच।।
कोई कभी खरोंच, विचारों से अच्छी है।

मस्ती करती खूब, हृदय से बिल्कुल सच्ची।।
कहें ' मधुर ' कविराय, नहीं है देती उलझन।
सहज,सरल, शुचि चित्त,भले है इसका लघु तन।।२।।

सृजन संख्या:-३
विधा:- सरसी छंद

गौरैया मेरे ऑंगन में,आये खेले खेल।
सहज रूप में कर लेती है,सबके दिल से मेल।।
चहचह करते जाना, गौरैया का काम।
मन बहलाते जाना सबकी,देना है आराम।।१।।

इसकी रक्षा इसकी सेवा, ईश्वर सेवा मान।
छोटी नहीं समझना इसको,इसका काम महान।।
रखे संतुलन जीव जगत से, इसके सुंदर ढंग।
इसकी रक्षा करते जायें, महाबली बजरंग।।२।।

–ब्रह्मनाथ पाण्डेय ' मधुर '

वार्ड नंबर- 5 का◌ॅ◌ंटी, मुहल्ला - ककटही, नगर पंचायत - मेंहदावल, पोस्ट - मेंहदावल, जिला - संत कबीर नगर
उत्तर प्रदेश 272271

गौरैया की पुकार

छोटी सी मैं नन्ही गौरैया का आना,
फुदक-फुदक कर गाऊं गाना।
आंगन में जब खेला करती,
सबके मन को भाया करती।

घर-आंगन की शोभा थी वो,
हर चौखट की रौनक थी वो।
अब ढूंढो तो नहीं मिलेगी वो,
बिछड़ गई कहीं पर खो गई वो।

अब पेड़ों की वो छांव नहीं है,
कौन बनाए घोंसला उसका।
शहरों की इस दौड़ में देखो,
कहीं दबा है आशियां उसका।

गौरैया को बुलालो फिर दोबारा।
वन संरक्षण का तुम दिया जलाओ,
थोड़ी धूप, हवा, घर पर लाओ।
मैं फिर आयेगी गौरैया चहकने।

–डॉ शरीफ़ ख़ान।
कोटा, राजस्थान

गौरैया और प्रकृति

फिर से महके हवा, लौटे वो प्यारी गौरैया,
प्रकृति के संग गाए, चहके हमारी गौरैया।
पेड़ों की शाख़ों पर घर उसका बसता था,
हरियाली में चहकती दुनिया सारी गौरैया।
नदियों की सरगम में, पत्तों की सरसराहट में,
हर साज़ पे झूमे थी मासूम सी गौरैया।
जब खेत थे लहलहाते, जल था निर्मल हर ओर,
तब खुशियों के गीत सुनाती थी गौरैया।
अब धुआँ, शोर और कटते हुए ये जंगल,
ढूंढे भी तो कहाँ मिले बेचारी गौरैया।
आओ फिर से प्रकृति को सीने से लगाएँ हम,
ताकि फिर से लौटे और गाए हमारी गौरैया।
रिश्ता है शरीफ़ इसका हर फूल और डाली से,

प्रकृति की पहचान है छोटी सी गौरैया।

कहाँ गई वो गौरैया ?

कहाँ गई वो चहचहाती सी प्यारी गौरैया,
शहर की भीड़ में कहां खो गई वो गौरैया।
सीमेंट के रेगिस्तानों ने छीन लिए आशियाने,
पेड़ों की छाँव तरसती, बेघर हुई गौरैया।
मोबाइल की तरंगों ने छीन ली उसकी दुनिया,
खामोश फिज़ाओं में रोती रही गौरैया।
कीड़ों मकोड़ों से उसकी भूख भी मिट न पाई,
खेतों की मिट्टी से कहीं दूर गुम हो गई गौरैया।
पानी के छोटे-छोटे प्रकृति के स्त्रोत भी सूख बैठे,
प्यासी चोंच और प्यासे कंठ से पुकारे वही गौरैया।
हमने ही उजाड़ा है उसका ये घर और आंगन,
अब किससे चहचहाए शिकायत करे बेचैन गौरैया।

"शरीफ़" मिलकर फिर से उनका वो वादा निभाएँ,
लौट आए वो हमारे आँगन में चहके हमारी गौरैया।

@ डॉ शरीफ़ ख़ान,
कोटा, राजस्थान

चिरैया गौरैया

चिरैया गौरैया प्यारी।
कहां खो गई हमारी।।
दिखती नहीं अटा मड़वा पर,
 प्रकृति की ये रचना प्यारी ।।

 ये रात को कुछ न खाये ।
कहीं घूमने भी नहि जाये ।।
बच्चों को ये सबक सिखाये ।
ठूंस ठूंस कर कभी न खाये ।।
दाने चाहे जितने डालो , पेट न
करती भारी ।

अधिक परिश्रम यह है करती ।
दिवस कहीं आराम न करती।।
केवल रात्रि में है यह सोती ।
कभी नहीं बीमार है होती ।।
हल्का फुल्का ये खाती है ,
आहार करें न भारी ।

हो बीमार तो खाना छोड़े ।
पूर्ण प्रकृति से नाता जोड़ें ।।
स्वबच्चों का पालन करती ।
प्यार से पंखों में है भरती ।।
लेती प्रकृति से उतना ही ,
और देती शिक्षा प्यारी।।

इसका अब तो संरक्षण हो ।
प्रयत्न करो तो संवर्धन हो ।।
दूषित प्रकृति परिवर्तन हो ।
कुकिरणों से भी रक्षणन हो ।।
ये मानव मन में तो सोचो , बड़ी
है जिम्मेदारी।।

पंछिन को दाना जल रखना ।
कृत्रिम घोंसला बना के रखना।।
वृक्षारोपण भी तुम्हें करना।
डाल पे पानी व्यवस्थित करना।।
दाना पानी देना है उन्हें , बन जा
पर उपकारी ।।

–डॉ राजेश तिवारी मक्खन
झांसी, उ प्र

मेरे घर में आई गौरैया

चीं चीं करती शोर मचाती
चिड़िया।
सदा कमरे में घुस जाती चिड़िया
गर्मी है कमरे में चलते पंखे से
टकराती चिड़िया।
चोट लगे तो घायल हो कर फर्श
पर नीचे गिर जाती चिड़िया।
जब मैं पानी देने जाऊं पास में
जल पीकर उड़ जाती चिड़िया I
धीरे धीरे पेड़ कट गए घोंसले,
कहां बनाती चिड़िया।
पहले तिनके तिनके जोड़ कर
मेरे कमरे में रख जाती चिड़िया
कमरे को साफ किया झाड़ू से
पर तिनका ,बीट गिराती
चिड़िया।
अब जाने क्यों कम हो गया
उनका आना ,कहा रह गई वे
सब।,किसको गान सुनाती
चिड़िया
कितने जतन।करता हूं मैं,पानी
घोंसला सब रखता हूं फिर भी
पास न आती चिड़िया।
जो खिड़की, दरवाजे बंद किए
थे, उनको मैंने फिर खोल दिए
पर फिर भी पास न आती
चिड़िया।

गौरैया की नस्ल घट
रही,नेताओं सी अदृश्य हो गई
कभी तो दर्शन
दे जाती चिड़िया।
मैं तेरे बचपन का साथी कितने
दाने डाले तुझको, काश वही
गीत सुनाओ मुझको मेरे
बचपन की साथी चिड़िया।

-शैलेन्द्र कुमार अम्बष्ट
वाराणसी।

मानवमित्र गौरैया

डॉ. भोला दत्त जोशी

चली गई तुम हमें छोड़कर
गौरैया तुम वापस आओ,
घर पर बच्चे बाट निहारें
सूने आंगन को समझाओ।

भूल न पाते तेरा चहकना
दाना चुग फुर्र उड़ जाओ,
जल्दी आओ गौरैया रानी
वातावरण फिर महकाओ।

आंखें तरसतीं तुम्हें देखने
खुशीकलश उंडेल जाओ,
शाला की बगिया आकर
बालमन भी बहला जाओ।

अंखियां देखें आकाश में
अब अपने दर्शन दे जाओ,
घबराई आंखों में सुकून
वो सुखद परछाई दे जाओ।

कीड़े चुग फसल बचाई
कृषक मित्र शीघ्र आओ,
घोंसला तेरा तैयार बैठा
आकर जीवंत करवाओ।

पेड़ रोपेंगे वादा हमारा
जल के सोते बनाएंगे,
आ जाओ गौरैया रानी
एक झलक दिखलाओ।

– डॉ भोला दत्त जोशी
डी लिट, केंद्रीय विश्वविद्यालय
बोलिविया अमेरिका

कवि,शिक्षक एवं साहित्यकार
पुणे, महाराष्ट्र

नन्ही गौरैया आंगन की

अपने आंगन की गौरैया
मेरी खुशियों का आधार।
उसकी मुस्कान में, है मेरी,
सारी दुनिया का प्यार।

अपने आंगन की गौरैया
मेरी जिंदगी की रानी।
उसके कदमों में, है मेरी,
सारी दुनिया की कहानी।

एक अधूरा आंगन लगता
जब तक चहचहाती आवाज
न गूंजे,आंगन में,जीवन नीरस
बेकार है पक्षी का कलरव सुख
की खान है।

बचाव प्रकृति, बचाव गौरैया
की जान सुखमय हो जीवन
की पहचान जीवन पक्षी का
विलुप्त न हो ऐसे प्रयास सफल
हो।

–डॉ संजीदा खानम शाहीन

गौरैया मेरे घर आंगन की।

प्रकृति प्रेम की पंक्षी रोज बैठ मुंडेरवां।
चहकती फुदकती है अनुराग मे भोरवां।।
मनभावन रूप मिलन की। 1
चुन चुन तिनके से सुघर घर बनाती।
चूं चूं चोच से अपने चंचलता चितलाती। ।
घोसला मे स्नेह समर्पन की। ।,,2
उडकर पंख से जाकर कहां से दाना लाती।
परिंदा जिंदा जन को मेहनत सिखलाती। ।
मुस्कान भरी स्वावलंबन की। ।,3
ऋजुता की इच्छित या पात्रता की परई।
हासिल पद भारत मे सोनवां की चिरई। ।
सम्मान है जिसके जीवन की। 4
विलुप्ति की तृप्ति एक नन्ही आवाज से।
संरक्षण की पुकार एक अनोखे अंदाज से। ।

एक अधूरा आंगन बिन नयन की।,5
वांछनीय गुणो से जब जब गीत सुनाती।
रोम रोम मे मोम पत्थर बन जस भाती। ।
मधुरता "बहाल कवि "मन की। ।6
गौरैया मेरे घर आंगन की। ।

–रामबहाल सिंह बहाल कवि
वाराणसी
मूल निवास श्री सद्गुरू शरण कुटीर जाफरखानी , मीरजापुर